झमेलिया बिआह

झमेलिया बिआह

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

JHAMELIYA BIAAH (झमेलिया बिआह)
A Play in Maithili Language by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-39-1
दाम: 200/- (भा.रु.)

चारिम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2013, श्रुति प्रकाशन, दिल्ली)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल
फुलवारी लगौनिहार एवम्
नव विहान अननिहारकेँ
समरपित

पात्र परिचय-

पुरुष पात्र-

भागेसर-	45 बर्ख
झमेलिया-	12 बर्ख
यशोधर-	48 बर्ख
राजदेव-	55 बर्ख
श्याम, (राजदेवक पोता)-	08 बर्ख
कृष्णानन्द, (बी.ए. पास)-	25 बर्ख
बालगोविन्द, (लड़कीक पिता)-	55 बर्ख
राधेश्याम, (लड़कीक भाय)-	35 बर्ख
घटक भाय-	60 बर्ख
रूपलाल, (समाज)-	40 बर्ख
गरीबलाल, (समाज)-	45 बर्ख
धीरजलाल, (समाज)-	45 बर्ख
पान-सात बच्चा-	7-15 बर्खक

स्त्री पात्र-

सुशीला, (भागेसरक पत्नी)-	40 बर्ख
दायरानी, (बालगोविन्दक पत्नी)-	52 बर्ख
घटक भाइक पत्नी-	55 बर्ख
सुनीता, (कौलेजमे पढ़ैत)-	20 बर्ख

भूमिका

बीसम सदीक मैथिल मेधा प्रेरणा आ प्रभावक दृष्टिए वैविध्यसँ पूर्ण अछि। हरिमोहन बाबूक संगे सुमनजी, किरणजी आ आरसी प्रसाद सिंह पारम्परिक काव्य हेतु आ काव्यप्रयोजनसँ अनुप्राणित छैथ, यद्यपि हिनकर लेखनमे राष्ट्रीयताक कार्यभाग सेहो विलक्षण। यात्रीजी पारम्परिक काव्यप्रयोजनकेँ सामाजिक क्रान्तिसँ जोड़ै छथिन आ हरिमोहन झा व्यंग्य विधाकेँ शक्तिशाली औजारक रूपमे प्रयोग करै छथिन। सदीक उत्तरार्धमे जगदीश प्रसाद मण्डलक उदय एकटा महतपूर्ण घटना! बेकतीगत प्रतिभा आ सामाजिक बोधक जबरदस सन्तुलन बनबैत जगदीशजी अपन कथा, कविता, उपन्यास आ नाटकसँ समानांतर संसारक सृजन करै छथिन। ई संसार अपन परम्पराकेँ जेतेक सिनेहसँ देखै छै, बहैत हवा, बदलैत माटि-पानिक रंगकेँ सेहो अत्यन्त हार्दिकतासँ स्वागत करै छइ। स्वातंत्र्योत्तर भारतक बदलैत सामाजिक, बौद्धिक परिवर्तनकेँ समेटलाक बादो ई विभिन्न प्रकारक फार्मूलेबाजीकेँ विनम्रतापूर्वक अस्वीकार करैए। संचार-परिवहनक बदलैत उपकरण आ मैथिली समाजक नवोदित बौद्धिक वर्गक अपेक्षाकृत उदारवादी रूखसँ जगदीश प्रसाद मण्डलजी मैथिली साहित्यक अनिवार्य तत्वक रूपमे स्थापित होइ छैथ। उत्तर आधुनिक परिवर्तन बौद्धिकताक अन्तरालकेँ नीक जकाँ भरै छै आ दूरसंचार क्रान्तिक हिसाबे जहिना महकौआ केस आ पेरिस तहिना भदेस बेरमा गाम। जगदीशजी ऐ हिसाबे एकटा एहेन मानक बनबै छथिन जे

असंभवे जकाँ अछि। ओ केंद्रीयताक विरोध दरभंगा, पटना वा दिल्लीसँ नै अपन गाममे रहि कऽ करै छथिन।

बीसम सदीक उत्तरार्धसँ अखन धरि बौद्धिकता आ प्रखरताक दृष्टिए विश्व साहित्य उत्तर-आधुनिकतामे डूमल अछि। उत्तर-आधुनिकताक कोनो सर्वमान्य परिभाषा उपलब्ध नै अछि आ विद्वान प्रत्येक नव-प्रवृत्तिकेँ उत्तर-आधुनिक कहि सन्तुष्ट भऽ जाइ छथिन। ओना ई आन्दोलन साहित्य आ सौंदर्यक कोनो सर्वमान्य आ केंद्रीय मानदंडक विरोध करैए आ वर्ग, क्षेत्र, देश आ रूचिक हिसाबे रचनाक लोकतांत्रिकताकेँ समर्थन करैए। दलित प्रश्न, अश्वेत प्रश्न, नारीक प्रश्न आ गामक प्रश्नक विभिन्न रूप उत्तर-आधुनिक आन्दोलनकेँ नव स्वरूप दइ छइ।

मैथिली साहित्य मे ऐ लोकतांत्रिकताक खास रूप जगदीश प्रसाद मण्डलजीमे भेटत। ओना ओ प्रवृत्तिक हिसाबे आधुनिक छैथ, पिछड़ल गाम आ पिछड़ल लोकक प्रति अद्भुत आकर्षणक संग। मुदा मिथिलाक एकटा साधन विहिन गाममे रहि कऽ मैथिली साहित्यक श्रीवृद्धि जइ समर्पणसँ ओ कऽ रहल छैथ, ई साबित कऽ रहल अछि कि मैथिली साहित्य सेहो केंद्रीयक स्थानपर क्षेत्रीय भऽ रहल अछि। आ ई केंद्रीय बनाम क्षेत्रीय उत्तर-आधुनिकतावादक प्रमुख अभिलक्षण अछि। तँए जगदीश प्रसाद मण्डलजीक साहित्यक परिधिमे स्थित गाम, लोक, जाति, नारी वर्ग आ आनो आन ओइ वर्ग सबहक चित्रण अछि जे अपन आवाज उठाबैमे अक्षम अछि।

उत्तर आधुनिकतावादक दिस कोनो सायास दृष्टि नै हेबाक बाबजूद उत्तरआधुनिक दृष्टिसँ ओ श्रेष्ठ लेखक छैथ। एहेन लेखक जे कोनो एकल आ एकीकृत संरचनाक स्थानपर विविधता आ बहुलवादक समर्थन करैत हो। सौंदर्य आ मानकक आतंककेँ

अस्वीकार करैत जे परम्परागत रूचिमे जनतांत्रिक हस्तक्षेप करैत हो। उत्तर आधुनिकतावाद मानै छै कि कोनो मानदंड सर्वमान्य नहि। सर्वव्यापी आ शाश्वत मूल्यांकन पद्धतिक विरोधमे उत्तरआधुनिकता विशेष सक्रिय छैक। आ उत्तरआधुनिकताक ऐ प्रवृत्तिपर बल जगदीशजीक संदर्भमे ऐ दुआरे कि हरेक नव संरचना मूल्यांकनक नव कसौटीक मांग करै छइ।

"झमेलिया बिआह" जगदीश प्रसाद मण्डलजीक तेसर नाटक थिक। ऐसँ पहिने 'मिथिलाक बेटी' आ 'कम्प्रोमाइज' संग-संग कल्याणी, बिरांगना, सतमाए आ समझौता ऐ पाँचो एकांकीक संग्रह 'पंचवटी' नाओंसँ आ 'रत्नाकर डकैत' तथा 'स्वयंवर' नाटक सेहो प्रकाशित भेलैन अछि।

'झमेलिया बिआह', 'मिथिलाक बेटी' आ 'कम्प्रोमाइज' ई तीनू नाटक अपन औपन्यासिक विस्तार आ काव्यात्मक दृष्टिसँ परिपूर्ण। लेखक समकालीन विश्व आ गद्यक पारस्परिकतासँ नीक जकाँ परिचित छैथ, तँए हिनकर संपूर्ण रचना-संसारमे समकालीनताक वैभव पसरल अछि, जेते वैचारिक, ओतबे रूपगत। समकालीनताक प्रति हिनकर झुकाव "झमेलिया बिआह"क एकटा विशेष स्वरूप दइ छइ। बारह सालक नेनाक बिआहक ओरियाओन करैत माए-बापक चित्र जेते हँसबै छैक, माएक बिमारी ओतबे सुन्न। लेखकक रचना संसारमे काल-देवता लेल विशेष जगह, तँए ई नाटक प्रहसनक प्रारंभिक रूपगुण देखाबितो किछु आर अछि। पहिले दृश्यमे सुशीला कहै छथिन "राजा दैवक कोन ठेकान...", "अगर दुरभाखा पड़तै तँ सुभाखा किए ने पड़ै छै...।" आ राजा, दैवक कर्तव्यक प्रति ई उदासीनताक अनुभव समस्त आस्तिकता आ भाग्यवादिताकेँ खंडित करैए।

सभ नाटकमे भरत मुनिकेँ खोजनाइ जरूरी नै, ओना उत्साही

विवेचक अर्थ-प्रकृति, कार्यावस्था आ संधिक खोज करबे करता, आ कोनो तत्व नै मिलतैन तँ चिकड़ि उठता। यद्यपि लेखकक उद्देश्य स्पष्ट अछि। शास्त्रीय रूढ़ि जेना–नान्दीपाठ, मंगलाचरण, प्रस्तावना, भरतवाक्यक प्रति लेखक कोनो आकर्षण नै देखबै छथिन। एतबे नै पाश्चात्य नाट्य सिद्धांतकें हूबहू -देकसी- खोजएबलाकें आलस सेहो लगतैन। तँए 'झमेलिया बिआह' नाटकमे स्टीरियोटाईप संघर्ष देखबाक ईच्छुक भाय लोकैन कनेक बचि बचा के चलब। विसंगति आ समस्या नाटकक फार्मूलाकें नाटकमे खोजएबलाकें सेहो झमेला बुझा सकै छैन, किएक तँ लेखक कोनो फार्मूलाकें स्वीकारि कऽ नै लिखै छथिन।

सीधा-सीधी अंक-विहिन "झमेलिया बिआह" नअ गोट दृश्यमे बँटल अछि : अनेक दृश्यक एकांकी। ने बहुत छोट आ ने नमहर। तीन चारि घन्टाक बिना झमेलाकें 'झमेलिया बिआह'। मात्र घर वा दरबज्जाक साज-सज्जा। तेरहटा पुरुष आ चारिटा स्त्री पात्रक नाटक। एकटा परदा या बॉक्स सेटपर मंचित होमए योग्यसँ लऽ कऽ पैघ-पैघ मंच धरिक नाटक। कोनो बान्ह-छेकि नहि। निर्देशककें पूर्ण स्वतंत्रता। छोट-छोट रसगर संवाद, संघर्ष आ उतार-चढ़ावक संभावनासँ युक्त। ने केतौ नमहर स्वागत ने नमहर संवाद। असंभव दृश्य, बाढ़ि, हाथी-घोड़ा, कार जीपक कोनो योजना नहि। संवादक द्वारा विभिन्न बरियाती या यात्राक कथासँ जिज्ञासा आ आद्यांत आकर्षण। कथामे चैता केर रमणीयता आ मर्यादा, तँए जोगीराक दिशाहीनता आ उद्दाम वेग नै भेटत। गंभीर साहित्य सर्वदा अपन समैक अन्न, खून पसेनाक गंधसँ युक्त होइत अछि। आ "झमेलिया बिआह" सेहो पावनि-तिहार, भनसा घरक फोड़न-छौंक, सोयरी, श्मशान आ पकमानक बहुवर्णी गंधसँ युक्त अछि, एकदम ओहिना

जेना पाब्लो नेरूदा विभिन्न कोटिक गंधकेँ कवितामे खोजै छथिन।

'झमेलिया बिआह'क सामाजिक आ सांस्कृतिक आधारपर कनेक विचार करू। ई ओइठामक नाटक अछि, जतए कर्मपर जनम, संयोग आ कालदेवताकेँ अंकुश छैक, जैठामक लोक मानै छथिन जे करवनो मुहसँ अवाच कथा नै निकाली। दुरभक्खो विषाइ छइ। सामाजिक रूपेँ ओ वर्ग जेकर हँसी-खुशी माटिक तरमे तोपा गेल अछि। लैंगिक विचार हुनकर ई जे पुरुख आ स्त्रीगणक काज फुट-फुट अछि। आ विकासक उदाहरण ई कि जैठीम मथ-टनकीक एकटा गोटी नै भेटै छै तैठीन साल भरि पथ-पानिक संग दबाइ खाएब पार लगत?

मुदा जगदीशजी केवल सातत्य आ निरंतरताक लेखक नै छथिन, परिवर्तनक छोट-छोट यतिपर अपन कैमरासँ फ्लैश दैत रहै छथिन। तँए यथास्थितिवाद लेल अभिशप्त होइतो यशोधर बुझै छथिन जे मनुक्खक मनुखता गुणमे छिपल छै नै कि रंगमे। आ सुशीला सामाजिक स्थितिपर बिगड़ै छथिन कि विधाताकेँ चूक भेलैन जे मनुक्खोकेँ सींघ नाँगैर किए ने देलखिन। आ ई नाटक कालदेवताक ओइ खंडसँ जुड़ैए जतए पोता श्याम तेरह के थर्टिन आ तीन के थ्री कहै छथिन। ऐठाम अखबार आबै छै आ राजदेव देशभक्तिक परिभाषाकेँ विस्तृत बनेबा लेल कटिबद्ध छथिन। खेतमे पसीना चुबबैत खेतिहर, सड़कपर पत्थर फोड़ैत बोनिहार, धारमे नाव खेबैत खेबनिहार सभ देश सेवा करैए, आ राजदेव सभकेँ देशभक्त मानै छथिन।

'झमेलिया बिआह'क झमेला जिनगीक स्वाभाविक रंग परिवर्तनसँ उद्भूत अछि, तँए जीवनक सामान्य गतिविधिक चित्रण चलि रहल अछि कथाकेँ बिना नीरस बनेने। नाटकक कथा विकास

बिना कोनो बिहाड़िक आगू बढ़ैए, मुदा लेखकीय कौशल सामान्य कथोपकथनकेँ विशिष्ट बनबैए। पहिल दृश्यमे पति-पत्नीक बातचितमे हास्यक संग समय देवताक क्रूरता सानल बुझाइत अछि। दोसर दृश्यमे झमेलिया अपन स्वाभाविक कैशोर्यसँ समैक द्वारा तोपल खुशीकेँ खुनबाक प्रयास करैए। पहिल दृश्यमे बेकती परिस्थितिकेँ समक्ष मूक बनल अछि, आ दोसर दृश्यमे बेकतीत्व आ समैक संघर्ष कथाकेँ आगू बढ़बैत कथा आ जिनगीकेँ दिशा निर्धारित करैए। तेसर दृश्य देशभक्ति आ विधवा विवाहक प्रश्नकेँ अर्थ विस्तार दैत अछि, आ ई नाटकक गतिसँ बेसी जिनगीकेँ गतिशील करबा लेल अनुप्राणित अछि।

चारिम दृश्यमे राधेश्याम कहै छथिन जे कमसँ कम तीनक मिलानी अबस हेबाक चाही। आ, लेखक अत्यन्त चुंबकीयतासँ नाटकीय कथामे ओइ जिज्ञासाकेँ समाविष्ट कऽ दइ छथिन कि पता नै मिलान भऽ पेतै आ कि नहि। ई जिज्ञासा बरियाती-सरियातीक मारि-पीट आ समाजक कुकुर-चालिसँ निरंतर बनल रहै छइ। आ पांचम दृश्यमे मिथिलाक ओ सनातन ‘खोटिकरमा’ पुराण। दहेज, बेटी, बिआह आ घटकक चक्रव्यूह! आ लेखकक कटुक्ति जे ने केवल मैथिल समाज बल्कि समकालीन बुद्धिजीवी आ आलोचना लेल सेहो अकाट्य अछि : केतए नै दलाली अछि। एक्के शब्दकेँ जगह-जगह बदैल-बदैल सभ अपन-अपन हाथ सुतारैए। आ घटकभायकेँ देखियनु। समैकेँ भागबा आ समैमे आगि लगबाक स्पष्ट दृश्य हुनके देखाइ छैन। अपन नीच चेष्टाकेँ छुपबैत बालगोविन्दकेँ एक छिट्टा असीरवाद दइ छथिन। बालगोविन्दकेँ जाइते हुनकर आस्तिकताक रूपांतरण ऐ बिन्दुपर होइत अछि-

> “भगवान बड़ीटा छथिन। जँ से नै रहितैथ तँ पहाड़क खोहमे रहैबला केना जीबैए। अजगरकेँ अहार केतए सँ अबै छइ।

घास-पातमे फूल-फड़ केना लगै छै... ।"

बातचितक क्रममे ओ बेर-बेर बुझबैक आ फरिछाबैक काज करै छैथ। मैथिल समाजक अगिलगओना। महत देबै तँ काजो कऽ देत नै तँ आगि लगा कऽ छोड़त!!!!!

छठम दृश्यमे बाबा आ पोतीक बातचित आ बरियाती जएबा आ नै जएबाक औचित्यपर मंथन। बाबा राजदेव निर्णय नै लऽ पाबै छथिन। बरियाती जएबाक अनिवार्यतापर ओ बिच-बिचहामे छथिन 'छैहो आ नहियोँ छइ। समाजमे दुनू चलै छइ। हमरे बिआहमे मामेटा बरियाती गेल रहैथ। 'मुदा खाए, पचबै आ दुइर होइक कोनो समुचित निदान नै भेटै छइ। बरियाती-सरियातीक बेवहार शास्त्र बनबैत राजदेव आ कृष्णानंद कथे-विहनिमे ओझरा कऽ रहि जाइ छैथ। दस बरिखक बच्चाकेँ श्राद्धमे रसगुल्ला मांगि-मांगि कऽ खाइबला हमर समाज बिआहमे किएक ने खाएत? तँए कामेसर भाय निसाँमे अढ़ाय-तीन साए रसगुल्ला आ किलो चारिएक माछ पचा गेलखिन आ रसगुल्लो सरबा एतए ओतए नै ऑंतेमे जा नुका रहल !!!

सातम दृश्य सभसँ नमहर अछि, मुदा बिआह पूर्व बरपक्ष आ कन्यागतक झीका-तीरी आ घटकभाय द्वारा बरियाती गमनक विभिन्न रसगर प्रसंगसँ नाटक बोझिल नै होइ छइ। आ घटक भायपर धियान देबै, पूरा नाटकमे सभसँ बेसी मुहावरा, लोकोक्ति, कहबैकाक प्रयोग वएह करै छथिन। मात्र सातमे दृश्यकेँ देखल जाए-

"खरमास (बैसाख जेठ) मे आगि-छाइक डर रहै छइ।" (अनुभवक बहाने बात मनेनाइ)... ।"

"पुरुष नारीक संयोगसँ सृष्टिक निर्माण होइए।" (सिद्धांतक तरे धियान मूलबिन्दुसँ हटेनाइ)... ।

"आगूक विचार बढ़बैसँ पहिने एकबेर चाह-पान भऽ जाए।" (भोगी आ लालुप समाजक प्रतिनिधि)...।

"जइ काजमे हाथ दइ छी ओइ काजकेँ कैये कऽ छोड़ै छी।" (गर्वोक्ति)...

"जिनगीमे पहिल बेर एहेन फेरा लगल।" (कथा कहबासँ पहिले धियान आकर्षित करबाक सफल प्रयास)...।

"खाइ पिबैक बेरो भऽ गेल आ देहो हाथ अकैड़ गेल...।"

"कुटुम नारायण तँ ठरलो खा कऽ पेट भरि लेताह मुदा हमरा तँ कोनो गंजन गृहणी नहियेँ रखती।"

(प्रकारांतरसँ अपन महत आ योगदान जनबैत ई ध्वनि जे हमरो कहू खाइले)

आठमो दृश्यमे बालगोविन्द, यशोधर, भागेसर, घटकभाय बिआह आ बरियातीकेँ बुझौएल के निदान करबा हेतु प्रयासरत् छैथ, आ लेखक घटकभायकेँ पूर्ण नांगट नै बनबै छथिन, मुदा ओकर मीठ-मीठ शब्दक निहितार्थकेँ नीक जकाँ खोलि दइ छथिन। ऐ दृश्यमे बाजल बात, मुहावरा, लोकोक्ति आ प्रसंग, उदाहरणक बले ओ अपन बात मनबाबए लेल कटिबद्ध छथिन। हुनकर कहबैकापर धियान दियौ-

"जमात करए करामात...।"

"जाबत बरतन ताबत बरतन...।"

"नै पान तँ पानक डन्टीए-सँ...।"

"सतरह घाटक सुआद...।"

"अनजान सुनजान महाकल्याण।"

मुदा घटकभायकेँ ऐ सुभाषितानिक की निहितार्थ? ई अर्थ पढ़बा लेल कोनो मेहनति करबाक जरूरी नहि। ओ राधेश्यामकेँ कहै छथिन 'जखन बरियाती पहुंचैए तखन शर्बत ठंढा गरम, चाह-पान, सिगरेट-गुटका चलैए। तैपर सँ पतोरा बान्हल जलपान, तैपर सँ पलाउओ आ भातो, पुड़ियो आ कचौड़ियो, तैपर सँ रंग-बिरंगक तरकारियो आ अचारो, तैपर सँ मिठाइओ आ माछो-मासु, तैपर दहीओ, सकरौड़ियो आ पनीरो चलैए।

नाटकक नअम आ अन्तिम दृश्य। बाबा राजदेव आ पोती सुनीताक वार्तालाप, आखिर ऐ वार्तालापक की औचित्य? जगदीशजी सन सिद्धहस्त लेखक जानै छथिन जे बीसम आ एकैसम सदीक मिथिला पुरुषहीन भऽ चुकल छैक। यात्रीजीक कवितापर विचार करैत कवयित्री अनामिका कहै छथिन 'बिहारक बेसी कनियाँ विस्थापित पतिगणक कनियाँ छैथ। 'सिंदूर तिलकित भाल' ओइ ठाम सर्वदा चिंताक गहींर रेखाक पुंज रहल छैक।

...भूमण्डलीकरणक बादो ई स्थिति अछि जे मिथिला, तिरहुत, वैशाली, सारण आ चंपारण यानी गंगा पारक बिहारी गाम सभ तरहेँ पुरुष विहिन भऽ गेल छैक। ...सभ पिया परदेशी पिया छैथ। ओइठाम। गाममे बँचल छैथ। वृद्धा, परित्यक्ता आ किशोरी सभ। एहेन किशोरी, जेकर तुरत्ते-तुरत बिआह भेलै या फेर नै भेल होए, भेलै ऐ दुआरे नै जे दहेज लेल पैसा नै जुटल हेतैक। 'बिआह आ दहेजक ऐ समस्याक बीच सुनीताकेँ देखल जाए। एक तरहेँ ओ लेखकक पूर्ण वैचारिक प्रतिनिधि अछि। यद्यपि कखनो-कखनो राजदेव, कृष्णानंद आ यशोधर सेहो लेखकक विचार बेक्त करै छथिन। सुनीता, सुशीला आ राजदेव मिथिलाक स्थायी आबादी, आ घटक भाइक बीच रहबा लेल अभिशप्त पीढ़ी। कृष्णान्द सन पढ़ल-लिखल युवकक स्थान

मिथिलाक गाममे कोनो खास नहि। आ लेखक बिना कोनो हो-हल्ला केने नाटकमे ऐ दुष्प्रवृत्तिकेँ राखि देने छैथ। जीवन आ नाटकक समानान्तरता ऐठाम समाप्त भऽ जाइ छै आ दूटा अर्द्धवृत्त अपन चालि स्वभावकें गमैत जुड़ि पूर्णवृत्त भऽ जाइत अछि।

रवि भूषण पाठक

करियन, समस्तीपुर।

पहिल दृश्य

(भागेसर, सुशीला)
(रोग सज्जापर सुशीला। दबाइ आ पानि नेने भागेसरक प्रवेश।)

भागेसर- केहेन मन लगैए?

सुशीला- की कहब। जखन ओछाइनेपर पड़ल छी तखन भगवानेक हाथ छैन। राजा-दैवक कोन ठेकान?

भागेसर- से की?

सुशीला- उठि कऽ ठाढ़ो भऽ सकै छी सुतलो रहि सकै छी।

भागेसर- एना किए बजै छी। कखनो मुहसँ अवाच् कथा नै निकाली। दुरभखो बिषाइ छइ।

सुशीला- (ठहाका दैत) बताह छी! अगर दुरभाखा पड़तै तँ सुभाखा किए ने पड़ै छइ? ई सभ मन पतियबैक बात छी।

भागेसर- अच्छा पहिने गोटी खा लिअ।

सुशीला- एते दिनसँ दबाइ करै छी कहाँ एकोरत्ती मन नीक होइए?

भागेसर- बदैल कऽ डाक्टर साहैब गोटी देलैन। हुनका बुझबेमे फेड़ भऽ गेल छेलैन। फेर सभ बात बुझा कऽ कहलैन। (गोटी खा पानि पीब पुन: सिरहौनीपर माथ रखैत।)

सुशीला- की सभ बुझा कऽ कहलैन?

भागेसर- कहलैन जे एक्के लक्षण-कर्मक केतेतो रंगक बिमारी होइए। बुझैमे दुविधा भऽ गेल तँए आइसँ दोसर बिमारीक दबाइ दइ छी।

सुशीला- (दर्दक आगमन होइत अछि। पँजरा पकैड़ने।) ओह! आब नहि बाँचब। पेट बड़ दुखाइए।

भागेसर- हाथ घुसकाउ ससाइर दइ छी।
(सुशीला हाथ घुसकबैत अछि आ भागेसर पेट ससारए लगैत अछि। कनीकालक पछाइत।)

सुशीला- हँ, हँ! कनी कऽ दर्द असान भेल। मन हल्लुक लगैए।

भागेसर- मनसँ सोग-पीड़ा हटाउ। रोगकेँ दबाइ छोड़ौत। भरिसक दबाइ आ रोगक भीड़ानी भेलै तँए दर्द उपकल।

सुशीला- भऽ सकैए। किएक तँ देखै छिऐ जे भूखल पेटमे छुच्छे पानि पीलासँ पेट ढकर-ढकर करए लगैए। भरिसक

सएह होइए।

भागेसर- भगवानक दया हेतैन तँ सभ ठीक भऽ जाएत।

सुशीला- किए भगवानो लोके जकाँ विचारि कऽ काज करै छथिन?

भागेसर- अखन तक एतबो नै बुझै छिऐ।

सुशीला- हमरा मनमे सदिकाल चिन्ते किए बैसल रहैए। हमर खुशीकेँ केतए नुका कऽ रखि देने छथिन भगवान। आकि..?

भागेसर- 'आकि' कथी?

सुशीला- नइ, सएह कहलौं। कियो ठहाका मारि हँसैए आ हमरा सबहक हँसीए हराएल अछि।

भागेसर- हराएल केकरो ने अछि। माटिक तरमे तोपा गेल अछि।

सुशीला- ओ निकलत केना?

भागेसर- खुनि कऽ।

सुशीला- कथीसँ खुनबै?

भागेसर- से जँ बुझितौं तँ अहिना थाल-पानिमे जिनगी बितैत।

सुशीला- जखन अहाँ एतबो नै बुझै छिऐ तँ पुरुख कोन सपेतक भेलौं। अच्छा अइले मनमे दुख नहि करू। नीक-अधलाक बात-विचार दुनू परानी नै करब तँ आनक आशासँ काज चलत।

(मुड़ी डोलबैत जेना महसूस करैत, मुँह चिकुरियबैत।)

भागेसर- कहलौं तँ ओहन बात जे आइ धरि हराएले छेलए मुदा ई बुझब केना?

(भागेसरक मुहक ऐगला दाँत सोझहा आएल, जइसँ पत्नीक हँसी बुझि पड़लैन।)

सुशीला- अहाँक खुशी देखि अपनो मन खुशिया गेल।

भागेसर- मन कहाँ खुशियाएल अछि।

सुशीला- तखन?

भागेसर- बतिसिया आब सठिया गेल अछि। वएह कलैप-कलैप आ कुहैर-कुहैर कुकुआ रहल अछि।

सुशीला- छोड़ू ऐ लट्टम-पट्टाकेँ। जेकरा पलखैत छै ओ करैत

रहह। अपन दुख-सुखक गप करू।

भागेसर- केना दुख-सुखक गप अखन करब। मन पीड़ाएल अछि हो-ने-हो..?

सुशीला- की?

भागेसर- पीड़ाएले मन ताउसँ वौराइ छइ। पहिने देहक रोग भगाउ तखन निचेनसँ विचार करब।

सुशीला- बेस कहलौं। भिनसरेसँ झमेलियाकेँ नै देखलिऐ हेन?

भागेसर- बाल-बोध छै केतौ खेलाइत हएत। भूख लगतै अपने ने दौगल औत।

सुशीला- ऐ देहक कोनो ठेकान नहि, तहूमे बिमारी ओछाइन धरौने अछि। जीता जिनगी पुतोहु देखा दिअ?

भागेसर- मन तँ अपनो तीन सालसँ होइए जे बेटा-बेटीक करजासँ उरीन रहब तखन जे मरियो जाएब तँ उरीन मनकेँ मुक्ति भेटत।

सुशीला- सएह मनमे उपकल जे बेटीक बिआह कैये नेने छी। जँ परानो छुटि जाएत तँ बिनु बरो-बरियातीक लहछु करा अंगबला अंग लगा लेत। मुदा..?

भागेसर- मुदा की?

सुशीला- यएह जे झमेलियोक बिआह कैये लइतौं।

भागेसर- अखन तँ लगनो-पाती नहियेँ अछि। समय अबै छै, बुझल जेतइ।

(झमेलियाक प्रवेश।)

झमेलिया- माए, माए मन नीक भेलौं किने?

सुशीला- बौआ, लाखो रोग मनसँ मेटा जाइए, जखने तोरा देखै छिअ। भिनसरेसँ नै देखलिय, केतए गेल छेलह?

झमेलिया- स्कूलक फीलपर एकटा गुनी आएल छेलइ। बहुत रास किदैन-कहाँ सभ झोरामे रखने छेलइ। डमरूओ बजबै छेलै आ गाबि-गाबि कहबो करै छेलइ।

सुशीला- की गबै छेलइ?

झमेलिया- लाख दुखक एक दबाइ! पाँचे रुपैआ दामो छेलइ।

सुशीला- एकटा किए ने नेने एलह?

झमेलिया- हमरा पाइ छेलए?

सुशीला- केमहर गेलइ?

झमेलिया- मारन बाध दिसक रस्ता पकैड़ चलि गेल।

सुशीला- बौआक बिआह कऽ दियौ?

(बिआहक नाओं सुनि झमेलियाक मुहसँ खुशी निकलैत।)

भागेसर- बियाहैयो जोकर तँ भाइये गेल अछि। कहुना-कहुना तँ बारहम बर्ख पार कऽ गेल हएत।

सुशीला- बड़का भुमकमकेँ केते दिन भेल? ओही बेर ने जनमल।

भागेसर- सेहो कि नीक जकाँ साल थोड़े जोड़ल अछि। मुदा अपना झमेलियासँ छोट-छोट सभकेँ बिआह भेलै, तँ झमेलियो भाइए गेल किने?

◌

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 695

दोसर दृश्य

(सुरूज डुमैक समय। बाढ़ैन लऽ झमेलिया आँगन बाहरए लगैत। सुशीला आबि बाढ़ैन छिनैत।)

सुशीला- जाबे जीबै छी ताबे तोरा केना आँगन-घर बहारए दियौ।

झमेलिया- किए, केकरो अनकर छिऐ? अपन घर-आँगन बहारब कोनो पाप छी।

सुशीला- धरम आ पाप नै बुझै छी। मुदा एते तँ जरूर बुझै छी जे भगवानेक बाँटल काज छिऐन ने। पुरुख आ स्त्रीगणक काज फुट-फुट अछि।

झमेलिया- राजा-दैवक काज ऐसँ फुट अछि। सभ दिन कहाँ बहारए अबै छेलौं। अखन तूँ दुखित छेँ, जखन नीक भऽ जेमे तखन ने तोहर काज हेतौ।

सुशीला- सएह बुझै छिही, ई नै बुझै छिही जे काजे पुरुख-स्त्रीगणक अन्तर कऽ ठाढ़ रखने अछि। भलेँ बेटा छिऐ एहेन-एहेन बेरमे तूँ नै देखमे तँ दोसर केकर आशा। मुदा..?

झमेलिया- मुदा की?

सुशीला- यएह जे माए-बाप बेटा-बेटीक पहिल गुरु होइ छइ। हिनके सिखैलासँ बेटा-बेटी अपन जिनगीक रस्ता धड़ैए।

(माएक मुँह झमेलिया ओहिना देखैए जहिना रोगसँ ग्रसित गाए अपन दूधमुहाँ बच्चा देखि हुकड़ैए। तहिना हाथक बाढ़ैन निच्चाँ मुहेँ केने सुशीला आँखि झमेलियाक चेहरापर रखि जेना पढ़ि रहल हुअए जे ऐ कुल-खनदान आ परिवारक संग माएओ बापक तँ यएह माटिक काँच दियारी छी जे अबैत दोसर दियारीकेँ नेसि टिमटिमाइत रहत। तखने भागेसर आ यशोधरक प्रवेश।)

भागेसर- (झमेलियासँ) बौआ साँझ पड़ल जाइ छै, दुआर-दरबज्जाक काज देखहक।

झमेलिया- दरबज्जा बहारि आँगन बहारए एलौं कि माए बाढ़ैन छीन लेलक।

(बिना किछु बजने भागेसर नीक-अधलाक विचार करए लगल।)

(कनीकालक पछाइत।)

भागेसर- (पत्नीसँ) मन केहेन अछि?

सुशीला- अहूँ बुझिते छी आ अपनो बुझिते छी जे साल भरि

दबाइ खाइले डाक्टर साहैब कहलैन से निमहत। जैठीम मथ-टनकीक एकटा गोटी नै भेटै छै तैठीन साल भरि पथ-पानिक संग दबाइ खाएब पार लगत?

(बहिनक बात सुनि यशोधरकेँ देह पसीज गेल। चाइनिक पसीना पोछैत।)

यशोधर- बहिन, भगवानो आ कानूनो ऐ परिवारक जवाबदेह बनौने छैथ। जाबे जीबै छी ताबे एहेन बात किए बजै छह?

सुशीला- भैया, अहाँ किए..? खाएर छोड़ू काजक की भेल?

यशोधर- बहिन, मने-मन हँसियो लगैए आ मनो कचोटैए। मुदा..?

सुशीला- मुदा की?

यशोधर- (मुस्की दैत) पनरह दिनमे पएरक तरबा खीया गेल मुदा काजक गोरा नै बैसल। एकटा लड़कीक भाँज नवानीमे लगल। गेलौं। दरबज्जापर पहुँच घरवारीकेँ अवाज दैते आँगनसँ निकलला।

(बिच्चेमे भागेसर मुस्की देलैन।)

सुशीला- कथो-कुटुमैतीकेँ हँसीएमे उड़ा दइ छएे?

यशोधर- हँसीबला काजे भेल। तँए हँसी लगलैन।

सुशीला- की हँसीबला काज भेल?

यशोधर- दरबज्जापर बैस गप चलेलौं कि जहिना हवाक सिहकीमे पाकल आम भड़भड़ा जाइत तहिना स्त्रीगण सभ आबए लगली।

सुशीला- स्त्रीगणे आबए लगली आ पुरुख नै?

यशोधर- स्त्रीगण बेसी पुरुख कम। एकटा स्त्री बिच्चेमे टपैक गेली।

सुशीला- की टपकली?

यशोधर- (मुस्की दैत) हँसियो लगैए आ छगुन्तो लगैए। बजली जे बर पेदार अछि कि जे आनठाम कन्यागत जाइ छैथ आ अहाँ..? सुनिते मनमे नेसि देलक। उठि कऽ विदा भऽ गेलौं।

सुशीला- स्त्रीगणेक बात सुनि अगुता गेलौं। परिवारमे बेटा-बेटीक बिआह पैघ काज छिऐ पैघ काजक रस्तामे छोट-छोट हुच्ची-फुच्चीपर नजैर नै देबाक चाहिऐ।

यशोधर- एतबे टा नै ने, गामो नीक नै बुझि पड़ल। आमक गाछीसँ बेसी तरबोनी खजुर बोनी। एहेन गामक स्त्रीगण तँ भरि दिन नहाइए आ झुटकेसँ पएरे-मजैमे बीता देत। तखन घर-आश्रमक काज केना हएत। सोझहे उठि कऽ रस्ता धेलौं।

सुशीला- आगू केतए गेलौं?

यशोधर- ननौर। गाम तँ नीक बुझाएल। मुदा राजस्थाने जकाँ पानिक दशा। खाएर कोनो कि बेटीक बिआह करब। बेटाक करब। बैसिते गप-सप्प चलल। घरवारी कुल-गोत्र पुछलैन। कहलयैन। सोझहे सुहरदे मुहेँ कहलैन, कुटुमैती नै हएत।

सुशीला- किए, से नै पुछलयैन?

यशोधर- की पुछितिऐन। उठि कऽ विदा भेलौं।

सुशीला- भैया, दिन-दुनियाँ एहने अछि। केते दिन छी आ कि नै छी। मन लगले रहि जाएत।

यशोधर- कोनो कि बेटीक अकाल पड़ि गेल जे भागिनक बिआह नै हएत।

सुशीला- डाक्टर साहैब ऐठाम केते गोटे पेटक बच्चा जँचबए आएल रहए।

यशोधर- ओ सभ बिआहक दुआरे खुरछाँही कटैए। मुदा..?

सुशीला- मुदा की?

यशोधर- माएओ-बापक सराध छोड़ि देत? बिआहसँ की हल्लुक काज सराधक छइ?

सुशीला- ठनका ठनकै छै तँ कियो अपना मत्थापर हाथ दइ छइ। ई तँ बुझै छी जे, 'गाए मारि कऽ जूत्ता दान' करैए। मुदा बुझनहि की हएत? आगूओ बढ़लौं।

यशोधर- छोड़ि केना देब। तेसर ठाम गेलौं तँ पुछलैन जे लड़का गोर अछि कि कारी?

सुशीला- किए एहेन बात पुछलैन?

यशोधर- लोकक माथमे भुस्सा भरि गेल छइ। एतबो बुझैले तैयार नै जे मनुक्खक मनुखता गुणमे छिपल छै नै कि रंगमे।

सुशीला- (निराश मने) की झमेलिया ओहिना रहि जाएत। सृष्टि ठमैक जाएत?

यशोधर- अखन लगन जोर नै केलकै हेन, तँए। जहिया संयोग आबि जेतै तहिया सभ ओहिना मुँह तकैत रहत आ बिआह भऽ जेतइ।

सुशीला- भैया, दिन-राति एहने अछि। करवन छी करवन नै छी।

यशोधर- बहिन, अइले मनमे दुख करैक काज नै। जखन काजमे भीड़ गेलौं तँ कैये कऽ अन्त करब। ओना एकटा

लगलगाउ बुझि पड़ल।

सुशीला- की लगलगाउ?

यशोधर- ओ कहलैन जे अहूठामक परिवारक काज देखि लियौ आ ओहूठामक देखि कऽ, काज सम्हारि लेब।

भागेसर- ई काज हेबे करत। अपनो ब्रह्म कहैए जे एक रंगाह परिवार (एक बेवसायसँ जुड़ल)मे कुटुमैती भेने परिवारमे हड़हड़-खटखट कम हएत?

सुशीला- (मुड़ी डोलबैत) हँ, से तँ हएत। मुदा विधाताकेँ चूक भेलैन जे मनुक्खोकेँ सींघ-नाँगैर किए ने देलखिन।

◌

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 793

तेसर दृश्य

(राजदेवक घर। पोता श्यामकेँ पढ़बैत।)

राजदेव- बौआ, स्कूलमे केते शिक्षक छैथ?

श्याम- थर्टिन गोटे।

राजदेव- ऐ बेर कोनमे जाएब?

श्याम- थ्रीमे।
(हाथमे अखवार नेने कृष्णानन्दक प्रवेश।)

कृष्णानन्द- कक्का, एकटा दुखद समाचार अपनो गामक अछि?

राजदेव- (जिज्ञासासँ) से की, से की?

कृष्णानन्द- (अखवार उनटबैत। आँगुरसँ देखबैत।) देखियौ। चिन्है छिऐ एकरा?

राजदेव- (दुनू आँखि तरहथ्थीसँ पोछि गौरसँ देखए लगैत।) ई तँ चिन्हरबे जकाँ बुझि पड़ैए। कनी गौरसँ देखए दाए हाथमे तानल बन्दूक जकाँ बुझि पड़ैए।

कृष्णानन्द- हँ, हँ कक्का, पुरानो आँखि अछि तैयो चिन्ह गेलिऐ।

राजदेव- कनी औरो नीक जकाँ देखए दाए। गामक तँ एक्के गोटे सीमा चौकीपर रहैए। ब्रह्मदेव।

कृष्णानन्द- (दुनू आँखिक नोर पोछैत।) हँ, हँ कक्का। हुनके छातीमे गोली लगलैन। मुँह देखै छिऐ खुगल। देश भक्तिक नारा लगा रहला हेन।

राजदेव- (तिलमिलाइत।) बौआ, तोरे संगे ने पढ़ै छेलह।

कृष्णानन्द- संगीए छला। अपना क्लासमे सभ दिन फस्ट करै छला। हाइए स्कूलसँ मनमे रोपि नेने छला जे देश भक्त बनब। से निमाहियो लेलैन।

राजदेव- बौआ, देश भक्तक अर्थ संकीर्ण दायरामे नै बिस्तृत दयरामे छइ। ओना अपन-अपन पसन आ अपन-अपन विचार सभकेँ छइ।

कृष्णानन्द- कनी फरिछा कऽ कहियौ?

राजदेव- देखहक, खेतमे पसीना चुबबैत खेतिहर, सड़कपर पत्थर फोड़ैत बोनिहार, धारमे नाओ खेबैत खेबनिहार सभ देश सेवा करैए, तँए देशभक्त भेला।

कृष्णानन्द- (नमहर साँस छोड़ैत।) अखन धरि से नै बुझै छेलिऐ।

राजदेव- नहियोँ बुझैक कारण अछि। ओना देशक सीमाक रक्षा बाहरी दुश्मनसँ (आन देशक) रक्षा लेल होइए। मुदा जँ मनुखमे एक-दोसराक संग प्रेम जगत तँ ओहुना रक्छा भऽ सकैए। मुदा से नै अछि।

कृष्णानन्द- (मुड़ी डोलबैत।) हँ से तँ नहियेँ अछि।

राजदेव- मुदा देशक भीतरो कम दुश्मन नै अछि। एहेन-एहेन रूप बना मुँह-दुबर लोकक संग कम अत्याचार केनिहारोक कमी नै अछि।

कृष्णानन्द- से केना?

राजदेव- देखिते छहक जे जइ देशमे खाइ बेतरे लोक मरैए, घर दबाइ, पढ़ै-लिखैक तँ बात छोड़ह। तइ देशमे ढोल पीटनिहार देश सेवक सभ अपन सम्पति चोरा-चोरा आन देशमे रखने अछि ओकरा की बुझै छहक?

कृष्णानन्द- हँ, से तँ ठीके कहै छी।

राजदेव- केहेन नाटक ठाढ़ केने अछि से देखै छहक। आजुक समैमे सभसँ पैघ आ सभसँ बिकराल समस्या देशक सोझा ई अछि जे सभकेँ जीबै आ आगू बढ़ैक समान

अवसर भेटै।

कृष्णानन्द- हँ, से तँ जरूरीए अछि।

राजदेव- एक्के दिस एहेन बात नै ने अछि?

कृष्णानन्द- तब?

राजदेव- समाजोमे अछि। कनी गौर कऽ कऽ देखहक। पछिले साल ने ब्रहमदेवक बिआह भेल छेलइ?

कृष्णानन्द- हँ। बरियातीओ गेल रही। बड़ आदर-सत्कार भेल रहए।

राजदेव- एक्कोटा सन्तान तँ नै भेलैक अछि।

कृष्णानन्द- नहि। हमरा बुझने तँ भरिसक दुनू परानीक भेँटो-घाँट तेना भऽ कऽ नै भेल हेतइ। किए तँ गाम अबिते खबड़ि भेलै जे सीमापर उपद्रव बढ़ि गेल, तँए सबहक छुट्टी केन्सिल भऽ गेल। वेचारा बिआहक भोरे बोरिया-बिस्तर समेट दौगल।

राजदेव- अखन तँ नव-धब घटना छै तँए जहाँ-तहाँ बाह-बाही हेतइ। मुदा प्रश्न बाह-बाहीक नै प्रश्न जिनगीक अछि। बेटाक सोग माए-बापकेँ आ पतिक दुख स्त्रीकेँ नै हेतै?

कृष्णानन्द- हेबे करतै।

राजदेव- एना किए कहै छह जे हेबे करतै। जहिना एक दिस मनुख कल्याणक धरम हेतै तहिना दोसर दिस माए-बाप अछैत बेटाक मृत्युक दोष, समाज सेहो देतैन।

कृष्णानन्द- (गुम होइत मुड़ी डोलबए लगैत।)

राजदेव- चुप भेने नै हेतह। समस्याकेँ बुझए पड़तह। जे समाजमे केना समस्या ठाढ़ कएल जाइए। तोंही कहह जे ओइ दूध-मुहाँ बच्चियाक कोन दोख भेलइ।

कृष्णानन्द- से तँ कोनो नै भेलइ।

राजदेव- समाज ओकरा कोन नजरिये देखत?

कृष्णानन्द- (मुड़ी डोलबैत।) हूँ-अ-अ।

राजदेव- हुँहकारी भरने नै हेतह। भारी बखेरा समाज ठाढ़ केने अछि। ओइ, बच्चियाक भविस देखनिहार कियो नै अछि, मुदा..?

कृष्णानन्द- मुदा की?

राजदेव- यएह जे, एक दिस कलंकक मोटरीसँ लादि देत तँ दोसर दिस जीनाइ कठिन कऽ देत।

कृष्णानन्द- हँ, से तँ करबे करत।

राजदेव- तोहीं कहह, एहेन समाजमे लोकक इज्जत-आवरू केना बँचत?

कृष्णानन्द- (मुड़ी डोलबैत। नमहर साँस छोड़ि।) समस्या तँ भारी अछि।

राजदेव- नै, कोनो भारी नै अछि। सामाजिक ढर्ड़ाकेँ बदलए पड़त। विघटनकारी सोच आ काजकेँ रोकि कल्याणकारी सोच आ काज करए पड़त। तखने हँसैत-खेलैत जिनगी आ मातृभूमिकेँ देखत।

कृष्णानन्द- (मुस्की दैत।) संभव अछि।

राजदेव- ई काज केकर छिऐ?

कृष्णानन्द- हँ, से तँ अपने सबहक छी।

राजदेव- हँ। ऐ दिशामे एक-एक आदमीकेँ डेग बढ़बैक जरूरत अछि।

◌

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 663

चारिम दृश्य

(भागेसर दरबज्जा सजबैत। बहाड़ि-सोहाड़ि चारिटा कुरसी लगौलक। कुरसी सजा भागेसर चारूकात निहारि-निहारि गौर करैत। तहीकाल बालगोविन्द आ राधेश्यामक प्रवेश।)

भागेसर- आउ, आउ। कहूँ कुशल?

(कुरसीपर तीनू गोटे बैसैत।)

बालगोविन्द- (राधेश्यामसँ।) बौआ, बेटी हमर छी, बहिन तँ तोरे छिअह। अखन समय अछि तँए..?

भागेसर- अपने दुनू बापूत गप-सप्प करू।
(कहि, उठि कऽ भीतर जाइत।)

राधेश्याम- अहाँक परोछ भेने ने...। जाबे अहाँ छिऐ, ताबे हम...।

भागेसर- नै, नहि। परिवारमे सभकेँ अपन-अपन मनोरथ होइ छइ। चाहे छोट भाए वा बेटाक बिआह होउ आकि बेटी- बहिनक होउ।

राधेश्याम- हँ, से तँ होइते अछि। मुदा अहाँ अछैत जेते भार अहाँपर अछि ओते थोड़े अछि। तखन तँ बहिन छी,

परिवारक काज छी, कोनो तरहक गड़बड़ भेने बदनामी तँ परिवारेक हएत।

बालगोविन्द- जाधरि अंजल नै केलौं हेन ताधैर दरबज्जा खुगल अछि। मुदा से भेलापर बान्ह पड़ि जाइए। तँए..?

राधेश्याम- हम तँ परदेश खटै छी। शहरक बेवहार दोसर रंगक अछि। गामक की बेवहार अछि से नीक जकाँ थोड़े बुझै छी। मुदा तैयो..?

बालगोविन्द- मुदा तैयो की?

राधेश्याम- ओना तँ बहुत मिलानीक प्रश्न अछि मुदा किछु एहेन अछि जेकर हएब आवश्यक अछि?

बालगोविन्द- आब की तहूँ बाल बोध छह, जे नै बुझबहक। मनमे जे छह से बाजह। मन जँचत कुटुमैती करब नै जँचत नै करब। यएह तँ गुण अछि जे अल्पसंख्यक नै छी।

राधेश्याम- की अल्पसंख्यक?

बालगोविन्द- जइ जातिक संख्या कम छै ओकरा संगे बहुत रंगक बिहंगरा ठाढ़ होइए। मुदा जइ काजे एलौं हेन तेकरा आगू बढ़ाबह। की कहलहक?

राधेश्याम- कहलौं यएह जे कमसँ कम तीनक मिलानी अवस होइ। पहिल गामक दोसर परिवारक आ तेसर लड़का-

लड़कीक।

बालगोविन्द- जँ तीनूक नै होइ?

राधेश्याम- तँ दुइओक।

बालगोविन्द- जेहने अपन परिवारक बेवहार छह तेहने अहू परिवारक अछि। गामो एकरंगाहे बुझि पड़ैए। लड़का-लड़की सोझहेमे छह।

राधेश्याम- तखन किए काज रोकब?

(जगमे पानि आ गिलास नेने भागेसर आबि, टेबुलपर गिलास रखि पानि आगू बढ़बैत। गिलास हाथमे लऽ।)

बालगोविन्द- नीक होइत जे पहिने काजक गप अगुआ लेतौं।

भागेसर- अखन धरि अहूँ पुरने विध-बेवहारमे लटकल छी। कुटुमैती हुअए वा नै मुदा दरबज्जापर आबि जँ पानि नै पीब, ई केहेन हएत?

(पानि पिबैत। तहीकाल झमेलिया चाह नेने अबैत। पानि पिआ दुनू गोटेकेँ चाहक कप दैत भागेसर अपनो कुरसीपर बैस चाह पीबए लगैत।)

बालगोविन्द- समय तेहेन दुरकाल भऽ गेल जे आब कथा-कुटुमैतीमे केतौ लज्जति नै रहैए। बेसीसँ बेसी चारि-आना

कुटुमैती, कुटुमैती जकाँ होइए। बारह आनामे झगड़े-झंझटि होइए।

भागेसर- हँ, से तँ देखिते छी। मुदा हवा-बिहाड़िमे अपन जान नै बँचाएब तँ उड़ि कऽ केतए-सँ केतए चलि जाएब, तेकर ठेकान रहत।

बालगोविन्द- पछिला लगनक एकटा बात कहै छी। हमरे गामक छी। कुल-खनदान तँ दबे छैन मुदा पढ़ि-लिख परिवार एते उन्नति केने अछि जे इलाकामे कियो कहबै छैथ।

भागेसर- वाह।

बालगोविन्द- लड़को-लड़की ऊपरे-ऊपरी। कमसँ कम पचास लाखक बियाहो भेल छेलइ। मुदा खाइ-पिबै बेरमे तेते मारि-पीट भेल जे दुनूकेँ मन रहतैन।

भागेसर- मारि किए भेल?

बालगोविन्द- पुछलयैन ते कहलैन जे बिआह-दानमे कोनो रसे नै रहि गेल अछि। बरियाती सदिकाल लड़कीबलाकेँ निच्चाँ देखबए चाहैत तँ सरियाती बरियातीकेँ। अही बीचमे रंग-बिरंगक बखेरा ठाढ़ कऽ मारि-पीट होइए।

भागेसर- एहेन बरियातीमे जाएबो नीक नहि।

बालगोविन्द- सज्जन लोक सभ छोड़ि देलैन। मुदा तैयो की बरियाती कम जाइए। तेते ने गाड़ी-सबारी भऽ गेल जे हुहुऔने फिरैए।

भागेसर- खाएर, छोड़ू दुनियाँ-जहानक बात। अपन गप करू।

बालगोविन्द- हमरेसँ पुछै छी। कन्यागत तँ सदति चाहै छैथ जे एकटा ॠृण उतारैमे दोसर ॠृण ने चढ़ि जाए। अपने लड़काबला छिऐ। केना दुनू परिवारक कल्याण हएत, से तँ..?

भागेसर- दुनियाँ केम्हरो गुड़ैक जाउ। मुदा अपनोले तँ किछु करब। आइ जँ बेटा बेच लेब तँ मुइलापर आगि के देत। बेचलाहा बेटासँ पैठ हएत।

बालगोविन्द- कहलिऐ तँ बड़बढ़ियाँ। मुदा समाजक जे कुकुर-चालि छै से मानता दुनू परिवार मिलि-जुलि काज ससाइर लेब। मुदा नढ़िया जकाँ जे भूकत तेकर की करबै?

भागेसर- हँ से तँ ठीके, पैछलो नीक चलैन आ अखुनको नीक चलैन अपनाए कऽ अधला चलैन छोड़ि देब। किए कियो भूकत। जँ भूकबो करत तँ अपन मुँह दुखौत। (बरक रूपमे झमेलियाक प्रवेश...)

बालगोविन्द- बेटा-बेटीक बिआहमे समाजक पाँचो गोटे तँ रहैक

चाहिऐ ने?

भागेसर- भने मन पाड़ि देलौं। घरे-अँगना आ दुआरे-दरबज्जापर तेते काज बढ़ि गेल जे समाज दिस नजरिये ने गेल।

बालगोविन्द- आबे की भेल, बजा लियनु। समाजकेँ तँ लड़का देखले छैन, हमहूँ दुनू बापूत देखिए लेलौं।

भागेसर- केहेन लड़का अछि?

बालगोविन्द- एते काल बटोही छेलौं तँए बटोहिक सम्बन्ध छल। मुदा आब सम्बन्ध जोड़ैक विध शुरू भऽ गेल तँए सम्बन्धी भेल जा रहल छी।

भागेसर- की कहूँ बालगोविन्दबाबू, जिनगीए तेते रिया-खिया गेल अछि जे बेलक बेली जकाँ बनि गेल छी।

बालगोविन्द- (ठहाका मारि) समैध एक भग्गू कहलिऐ। छोटोसँ पैघ बनैए आ पैघोसँ छोट बनैए। छोट-छोट किड़ी-मकौरी समैक संग ससरैत-ससरैत नमहर बनि जाइए। तहिना कलकतिया आकि फैजली आम सरही होइत-होइत तेहेन भऽ जाइए जे बिसवासे ने हएत जे ई फैजली बंशक बड़वड़िया बीजू छी।

भागेसर- बालगोविन्दबाबू, गप-सप्प चलिते रहत समाजोकेँ बजा लइ छिऐन। (समाज दिस नजैर दौड़बैत भागेसर आँगुरपर हिसाब जोड़ैत...) ओह फल्लां दोगला अछि।

(पुन: आँगुरपर जोड़ि) ओह फल्लाँ तँ दुष्ट छी दुष्ट। फल्लाँ पक्का दलाल छी। साला बेटी बिआहक बात बना रोजगार खोलने अछि। परिवारक बीच जाति होइए आकि समाजक बीच। जेकर विचार नीक रस्ते चलए ओ किए ने समाज बनाबए।

बालगोविन्द- समैध, किए अँटैक गेलौं?

भागेसर- बालगोविन्दबाबू, लोक तँ समाजेमे रहि समाजक संग चलत मुदा बिआह सन पारिवारिक यज्ञमे जँ समाजक लोक धोखा दइ तखन?

बालगोविन्द- समैध कहलौं तँ बेस बात, मुदा जहिना ई समाज अछि तहिना हमरो अछि। ठीके कहलौं जे बिआह सन काज जइसँ समाजक एक अलंग ठाढ़ होइत तइमे उचक्का सबहक उचकपन्नी औरो सुतरैए। बर-कनियाँक देखा-सुनीसँ लऽ कऽ सिनुरदान धरि किछु ने किछु बिगाड़ैक कोशिश करबे करैए।

भागेसर- एकटा बात मन पड़ि गेल। भाए-बहिनक बीचक कहै छी। (भागेसरक बात सुनि राधेश्याम चौंक गेल...)

राधेश्याम- की कहलखिन भाए-बहिन।

भागेसर- बाउ, अहाँक तँ बहिन छी। भाए-बहिनक बीच बरबैरिक

जिनगी हेबाक चाही से तेहेन- तेहेन वंशक बतौर सभ जनम लेने जाइऐ जे..?

राधेश्याम- की जे?

भागेसर- अपन पड़ोसीक कहै छी। सौ-बीघाक परिवारमे पाँच भाए-बहिनक भैयारी। बीस बीघा माथपर भेल। बहिन सभसँ छोट। सौ बीघा स्तरक लड़कीकेँ दू बीघाबला परिवारमे भाए सभ बिआहि देलक।

राधेश्याम- पिता नै बुझलखिन?

भागेसर- सएह ने कहै छी। पिता जँ पुत्रपर बिसवास नै करैथ तँ किनकापर करैथ। तेते चढ़ा-उतरी चारू बेटा कहलकैन जे पिता अपन भारे सुमझा देलखिन। बेटा सभ केहेन बेइमान जे बहिनक कोढ़-करेज काटि अपन कनतोरी सजबए लगल।

राधेश्याम- पछाइतो पिता नै बुझलखिन?

भागेसर- बुझिए कऽ की करितथिन? मुइने एला वैद तँ किदनकेँ कऽ जेता।

राधेश्याम- बड़ अन्याय भेल!

भागेसर- अन्याय की भेल अन्याय जकाँ। ओही सोगे माए जे ओछाइन धेलखिन से धेनेहि रहि गेलखिन। पितो बौरा कऽ वृन्दावन चलि गेलखिन।

राधेश्याम- बाबू, जहिना माए-बापक बेटी- छिऐन तहिना बहिन हमरो छी। ओना खाइ-पिबै आ लत्ता-कपड़ाक दुख अखन धरि नहियेँ भेलै, मुदा आगूक तँ नै कहि सकै छिऐन। दिन-राति माएक संग काज उदममे रहैए। माएक समकश तँ नै भेल मुदा दू-चारि सालमे भाइये जाएत। सभ सीख-लिख माएक छइ।

भागेसर- अहाँ केतए रहै छिऐ?

राधेश्याम- ओना बाहरे रहै छी। मुदा आन बहरबैया जकाँ नै जे गाम-घर, सर-समाज छोड़ि देलौं। जे कमाइ छी परिवारमे दइ छिऐ।

बालगोविन्द- समैध अबेर भऽ जाएत। कम-सँ-कम पाँचटा बच्चोकेँ शोर पाड़ियौ। अदौसँ अपना ऐठामक चलैन अछि। (गुरुकुलक अध्ययन समाजक काजक अनुकूल होएत)

(दरबज्जेपर सँ भागेसर बच्चा सभकेँ शोर पाड़लखिन...)

(पाँच-सातटा बच्चा अबैए...)

एकटा बच्चा- झमेलिया भैयाक बिआह हेतै कक्का?

भागेसर- हँ।

बच्चा- बरियाती हमहूँ जेबे करब।

भागेसर- तोरो लऽ जाए पड़तौ।

बच्चा- लऽ जाएब।

◌

पटाक्षेप

शब्द संख्या : 1184

पाँचम दृश्य

(बालगोविन्दक घर। पत्नी दायरानीक संग बालगोविन्द
बैसल...)

बालगोविन्द- ओना जे बात भेल तइसँ कुटुमैती हेबे करत। मुदा समय-साल तेहेन भऽ गेल जे बिआहो मड़बासँ लड़का रुसि-फुलि कऽ चलि जाइए।

दायरानी- हँ, से तँ होइए। मुदा जहिना कुत्ता-बिलाइकेँ धिया-पुता खेनाइ देखा फूसला कऽ लऽ अनैए तहिना मनुखो फूसलबैक ने..?

बालगोविन्द- नै बुझलौं। कनी फड़िछा दियौ।

दायरानी- कोन काज सिरपर अछि आ कोन काज लदऽ चाहै छी। जखने सिरपड़क काज छोड़ि दोसर काजमे लागब तखने घुरछी लागए लगत। जखने घुरछी लगत तखने काज ओझरा-पोझरा जाएत।

बालगोविन्द- तखन?

दायरानी- जेतेटा आ जेहेन काज रहए ओइ हिसाबसँ काज सम्हारि

ली। अखन बिआहक काज अछि तँए घटक भायकेँ बजा सभ गप कहि दियनु।

बालगोविन्द- अपनो विचार छल भने अहूँ कहलौं।

दायरानी- युग-जमाना अकानि कऽ चलैक चाही। जँ से नै करब तँ पाओल जाएब।

बालगोविन्द- कहलौं तँ बेस बात मुदा एहनो तँ होइ छै जे गाममे जखन चोर चोरी करए अबैए तखन ठेकयौने रहैए कतौ आ अपनेसँ हल्ला दोसर दिस करैए। लोक ओमहर गेल आ खाली पाबि चोर ठेकिएलहा घरमे चोरी कऽ लइए।

दायरानी- हँ, से तँ होइए। मुदा बेसी पिंगिल पढ़ने तँ काजो पछुआइए जाइए। तँए ओते अगर-मगर नै करू। एतबो नै आँखि अछि जे देखबै।

बालगोविन्द- कि देखबै?

दायरानी- बिना घटके केकर बिआह होइ छइ। समाजमे जखन सभ करैए तखन अपनो नै करब तँ ओहो एकटा खोंटिकरमे हएत किने।

बालगोविन्द- की खोटिकरमा?

दायरानी- अनेरे लोक की-कहाँ बाजत। तहूमे जेकर जीविका छिऐ ओ अपन मुँह किए चुप राखत। छोड़ू ऐ-सभ गपकेँ। जाउ अखने घटक भायकेँ हाथ जोड़ि कहबैन जे बेटी तँ समाजक होइ छै, कोनो तरहेँ समाजक काज पार लगाउ।

बालगोविन्द- (बुदबुदाइत) केतए नै दलाली अछि। एक्के शब्दकेँ जगह-जगह बदैल-बदैल सभ अपन-अपन हाथ सुतारैए। तखन तँ गरा ढोल पड़ल अछि, बजबै पड़त।

दायरानी- बजैत दुख होइए। अगर जँ लोक अपनो दिन-दुनियाँक बात बुझि जाए तैयौ बहुत हेतइ। खाएर, देरी नै करू, बेरू पहर ओ सभ औता, अखुनका कहल नीक रहत। तँए अखने कहि अबियौन।

(घटक भाइक दलानपर बैस जोर-जोरसँ पत्नीकेँ कहै छैथ। आँगनसँ पत्नी सुनति छैथ.. ।)

घटक भाय- समय केतए-सँ-केतए भागि गेल आ डारिक बिढ़नी छत्ता जकाँ समाज ओतै-के-ओतै लटकल अछि। आब ओ जुग-जमाना अछि जे बोही-खाता लऽ बैसल रहू आ आमदनी केतएतँ सवा रुपैआ। बाप रे, समैमे आगि लागि गेल।

पत्नी- (अँगनेसँ) ओहिना डिरियाएब। रखने ने रहू बेटाकेँ चूड़ा-दही खाइले। जेकर बेटा कमासुत छै ओकरा देखै

छिऐ जे केतए-सँ-केतए आगू चलि गेल। सपनों सपनाएल रही जे बड़दक संगे भरि दिन बहैबलाक बेटा ट्रेक्टरक ड्राइवरी करतै। दू-सेरक जगह दू हजारक परिवार बना लेतै।

(बालगोविन्दकेँ देखि घटक भाय दमैस कऽ खखास करैत। घटक भाइक खखास सुनि पत्नी बुझि गेलखिन। अपन बातकेँ ओतै रोकि देलैन।)

बालगोविन्द- गोड़ लगै छी भाय।

घटक भाय- जीबू-जीबू। भगवान खेत-खरिहाँन, घर-दुआर भरने रहैथ। एहनो समैकेँ अहाँ नहियेँ गुदानलिऐन। अहाँ सन-सन लोक जे समाजमे भऽ जाथि तँ केतए-सँ-केतए समाज पहुँच जाएत।

बालगोविन्द- भाय, सिरपर काज आबि गेल। तँए बेसी नै अँटकब।

घटक भाय- केहेन काज?

बालगोविन्द- बेटीक बिआह करब। उहए लड़की देखए बरपक्ष आबि रहल छैथ। तहीले..!

घटक भाय- अहाँकेँ नै बुझल अछि जे अही समाज लेल खुन सुखा रहल छी। की पागल छी। जेकरा लूरि ने भास छै से शहर-बजार जा-जा महंथ बनल अछि आ हम समाज धेने छी।

बालगोविन्द- हँ, से तँ देखिते छी। तँए ने...।

घटक भाय- अच्छा बड़बढ़ियाँ। ओना हम अपनो कानपर राखब मुदा बुझिते छी जे दस-दुआरी छी। जँ कहीं दोसर दिस लटपटेलौं तँ बिसैरियो जा सकै छी। तँए अबैसँ पहिने केकरो पठा देबै।

बालगोविन्द- बड़बढ़ियाँ। जाइ छी।

घटक भाय- ऐह, अहिना केना चलि जाएब। एते दिन ने लोक तमाकुले बीड़ीपपर दरबज्जाक इज्जत बनौने छेलै मुदा आब ओइसँ काज थोड़बे चलत। बिना चाह-पीने केना चलि जाएब?

बालगोविन्द- अहाँकेँ की अइले उपराग देब। बहुत काज अछि। तँए माफी मंगै छी अरवन छुट्टीए दिअ।
(बालगोविन्द विदा भऽ जाइत...)

घटक भाय- (स्वयं) भगवान बड़ीटा छथिन। जँ से नै रहितैथ तँ पहाड़क खोहमे रहैबला केना जीवैए। अजगरकेँ अहार केतए-सँ अबै छइ। घास-पातमे फूल-फड़ केना लगै छै...।
(बालगोविन्दक दरबज्जा। चौकीपर ओछाइन ओछाएल।

बालगोविन्द- सभ किछु तँ सुढ़िया गेल। कनी नजैर उठा कऽ देखहक जे किछु छुटल ने तँ...।

राधेश्याम- (चारू कात नजैर खिड़बैत...) नजैरपर तँ किछु ने अबैए। (कनी बिलमि) हँ, हँ, एकटा छुटल अछि। पएर धोइक बेवस्था नै भेल।

बालगोविन्द- बेस मन पाड़ि देलह। तँए ने नमहर काज (परिवारक ऐगला काज) मे बेसी लोकसँ विचार करक चाही। दसेमे ने भगवान वसै छैथ। जखने दसटा आँखि दस दिस घुमै छै तखने ने दसो दिशा देखि पड़ै छइ।
(भागेसर आ यशोधरक आगमन...)
जहिना समय देलौं तहिना पहुँचिओ गेलौं। पहिने पएर-हाथ धो लिअ तखन निचेनसँ बैसब।

भागेसर- तीन-कोस पएरे चलैमे मनो किछु ठेहिया जाइ छइ।
(दुनू गोटेकेँ पएर-हाथ धोइतेकाल घटक भाइक प्रवेश...)

घटक भाय- पाहुन सभ कहाँ रहै छैथ?

बालगोविन्द- भाय, नवका कुटुम छैथ। ओना अखन रीता (बेटी) बिआह करै जोकर नहियेँ भेल छै, मुदा ऐ देहक कोनो ठेकान अछि। बेटा-बेटीक बिआह तँ माए-बापक कर्ज

छी। अपना जीवैत केतौ अंग लगा देने भगवानो घरमे दोखी नै ने हएब।

घटक भाय- कुटुम, अपना ऐठामक जे बुइध-विचार अछि ओ दुनियाँमे केतए अछि। एक-एक काज ओहन अछि जेहेन पत्थर-कोइलाक ताउमे धिपा लोहाक कोनो समान बनैए।

भागेसर- हँ, से तँ अछिए।

घटक भाय- अपने ऐठाम खरही आ ठेंगासँ लड़का-लड़की (बर-कन्या) कें नापि बिआह होइत अछि।

यशोधर- आब ओ बेवहार उठि गेल।

घटक भाय- हँ, हँ, सएह कहै छी। बेवहार तँ उठि गेल मुदा ओइ पाछू जे विचार छल से नै ने मरि गेल। विचारवानक बखारीक अन्न तँ वएह ने छिऐन।

राधेश्याम- काका, कनी फरिछा दियौ। एक तँ नव कवरिया छी तहूमे परदेशी भेलौं।

घटक भाय- बौआ, तहूँ बेटे-भतीजे भेलह। बहुत पढ़ल-लिखल नहियेँ छी। लगमे बैसा-बैसा जे बाबा सिखौलैन से कहै छिअह। तहूँमे बहुत बिसैरिये गेलौं।

राधेश्याम- जे बुझल अछि सएह कहियौ।

घटक भाय- समाजमे दुइओ आना एहेन परिवार नै अछि जिनका परिवारमे बच्चाक टिप्पणि बनै छैन। बाँकी तँ बाँकीए छैथ। अदौसँ लड़काक अपेक्षा लड़कीक उम्र कम मानल गेल। जेकरा तारीख-मरकुमामे नै, नापमे मानल गेल।

राधेश्याम- जँ दुनूमे सँ कोनो बढ़नगर आ कोनो भुटाड़ि हुअए, तखन?

घटक भाय- बेस कहलह। तँए ने अबेवहारिक भऽ गेल। सदिकाल समाजकेँ आँखि उठा अहितपर नजैर राखक चाही।

भागेसर- हँ, से तँ चाहबे करी। मुदा विचारलो बात तँ नहियेँ होइ छइ।

घटक भाय- बेस बजलौं। ऐमे दुनू दोख अछि। विचारनिहारोकेँ विचारैमे गड़बड़ होइ छैन आ राजादैवक (प्रकृति निअम) दोख सेहो होइत अछि। अखने देखियौ गोर-कारी रंगक दुआरे केते सम्बन्ध नै बनि पबैए। एतबो बुझैले लोक तैयार नै जे मनुख रंगसँ नै गुणसँ बनैए।

यशोधर- हँ, से तँ होइते अछि। हमरो गाममे हाथमे सिनुर लेल बरकेँ बरक बाप गट्टा पकैड़ घिचने-घिचने गामे चलि

गेल।

घटक भाय- की कहूँ कुटुम नारायण देखैत-देखैत आँखि पथरा रहल अछि। मुदा अछैते औरूदे उरीसक दबाइ पीब उरीसे जकाँ मरिए जाएब से नीक हएत। तहिना देखब जे कुल-गोत्रक चलैत कुटुमैती भंगठि जाइए।

यशोधर- हँ, से तँ होइए।

घटक भाय- देखियौ, अपना बहुसंख्यक समाजमे अखनो धरि मुजबानीएक कारोबार चलि आबि रहल अछि। जे नीक-अधला बेरबैक विचार गड़बड़ा गेल। जेते मुँह तेते बात। जैठाम जे मुँहगर तैठाम तेकरे बात चलत। चाहे ओ नीक होय कि अधला।

यशोधर- कनी नीक जकाँ बुझा कऽ कहियौ?

घटक भाय- (बालगोविन्द दिस देख...) बालगोविन्द, आइ तँ कुटुम-नारायण सभ रहता किने?

बालगोविन्द- एक तँ अबेर कऽ एला हेन। तहूमे अखन धरि तँ आने-आने गप-सप्प चलल। काज पछुआएले रहि गेल अछि।

घटक भाय- आइ तँ कनियेँ देखा-सुनी हएत किने?

बालगोविन्द- हँ। मुदा बिआहसँ तँ बीध भारी होइए किने!

घटक भाय- हँ। से तँ होइते छइ। अखन जाइ छी। काल्हि सवेरे आएब। तखन जेना-जे हेतै से हेतइ।

भागेसर- काज जँ ससरि जाइत तँ चलि जैतौं।

घटक भाय- एहनो जाएब होइ छइ। जखन कुटुमैती जोड़ि रहल छी तखन एना औगतेने हएत।

◌

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 1222

छअम दृश्य

(राजदेवक दरबज्जा। चद्दरि ओढ़ि राजदेव पड़ल)

सुनीता- बाबा, बाबा-यौ। आँखि लगल अछि। (एक हाथमे लोटा दोसरमे गोटी)

राजदेव- नहि। जगले छी। दबाइ अनलह।

सुनीता- हँ। लिअ।

राजदेव- (चौकिएपर बैस गोटी खा पानि पीब कऽ) नाहकमे परान गमबै छी। कहू जे जानि कऽ बेसाहब तँ मरब नहि। मुदा करबे की करू। जानि कऽ कियो थोड़े कुत्ता बधिया करए जाइए। जखन कुकुर-चालि नाकपर ठेक जाए छै तखने ने कियो जान अबधारि जाइए।

सुनीता- पाकल आम भेलौं। आबो जँ अपन पथ-परहेज नै राखब तँ केते दिन जीब?

राजदेव- बुच्ची, तहूँ आब बच्चा नै छह जे बात टारि देबह। मुदा की करब? जखन समाजमे रहै छी तखन जँ बिआहमे बरियाती नै जाएब, मरलापर कठियारी नै जाएब, तँ

समाज आगू मुहेँ ससरत केना।

सुनीता- से तँ बुझलौं, मुदा..?

राजदेव- मुदा यएह ने जे जे जुआन-जहान अछि ओ जाए। से अपना घरमे अछि। तोँ बेटीए जाति भेलह, श्याम बच्चे अछि, बाबू परदेशेमे छथुन तखन तोँही कहह जे की करब?

सुनीता- (कनी गुम्म भऽ) हँ, से तँ अछि। मुदा समाजो तँ नमहर अछि। बूढ़-पुरान जँ नहियोँ जेता तैयो किनको काज थोड़े रुकतैन।

राजदेव- कहै तँ छह ठीके मुदा तेहेन-तेहेन ढोढ़ाइ-मंगनू सभ समाजमे फड़ि गेल अछि जे अपेक्षा (सम्बन्ध) जोड़त की तोड़ैए पाछू पील पड़ल अछि।

सुनीता- से की?

राजदेव- बिनु-विधक विध सभ आबि रहल अछि आ नीक विध मेटा रहल अछि। देखै छी तँ तामसे शपथ खा लइ छी जे आब बरियाती नै जाएब। मुदा फेर सोचै छी जे नै जेवइ तँ अपना बेर के जाएत।

सुनीता- बरियाती जाएब कोनो अनिवार्ये छइ?

राजदेव- छैहो आ नहियोँ छइ। समाजमे दुनू चलै छइ। हमरे बिआहमे ममे टा बरियाती गेल रहैथ। सेहो बरियाती नै घरवारी बनि कऽ।

सुनीता- तखन फेर एते बरियाती किए जाइ छइ?

राजदेव- सेहो कहाँ गलती भेलइ। जही लग्नमे हमर बिआह भेल ओहीमे श्यामो दोसकेँ भेलैन। पचाससँ उपरे बरियाती गेल रहैन।

सुनीता- गोटी खेलौं हेन। कनीकाल कल मारि लिअ। खाइओक मन होइए?

राजदेव- अखन तँ नै होइए। मुदा गोटी खेलौं हेन तँए की कहबह?

सुनीता- जे मन फुरए सएह करब।
(कृष्णानन्दक आगमन)

कृष्णानन्द- बड़ अनखनाएल जकाँ देखै छी कक्का? चद्दरि किए ओढ़ने छी?

राजदेव- कोनो कि सुखे ओढ़ने छी। मन गड़बड़ अछि।

कृष्णानन्द- की भेल हेन?

राजदेव- एक तँ पेट गड़बड़ भेने मन गड़बड़ लगैए। तहूमे तेहेन-तेहेन किरदानी सभ लोक करैए जे होइए अनेरे किए जीवै छी।

कृष्णानन्द- हँ, भने मन पड़ि गेल। कामेसर भायकेँ पानि चढ़ै छैन।

राजदेव- किए। केहेन बढ़ियाँ तँ रातिमे संगे बरियाती पुरलौं। तैबीच की भऽ गेलइ।

कृष्णानन्द- अपने तँ नै पुछलयैन मुदा कात-करोटसँ भाँज लगल जे बरियाती जाइसँ पहिने खूब चढ़ा लेने रहैथ। ओही निसाँमे अढ़ाइ-तीन साए रसगुल्ला आ किलो चारिएक माछ खेलखिन।

सुनीता- (खिसिया कऽ) जिनगीमे कहियो देखने छेलखिन आकि बरियातीए भरोसे ओरियाएल छला।

कृष्णानन्द- घरवारियो सबहक दोख छइ?

सुनीता- से केना?

कृष्णानन्द- ओते ओरियान किए करैए। जँ रहि जे जेतै तँ बरियाती कऽ सबारी कसत जे दुइर भऽ जाएत। तइसँ नीक ने जे

दुइर नै हुअ दइ छइ।

सुनीता- तखन तँ दबाइओ आ डाक्टरोक ओरियान करए पड़तै किने?

राजदेव- कोन बातमे ओझरा गेलह। अच्छा अखन की हालत छइ?

कृष्णानन्द- आब तँ बहुत असान भेलैन। पहिने तँ दमे नै धरए दइ छेलैन। डाक्टर कहलखिन जे आँत फाटि जैतैन। मुदा सम्हरला। गुण भेलैन जे तीन-चारि बेर छाँट भऽ गेलैन। ओहिना सौंसे-सौंसे रसगुल्ला खसलैन।

सुनीता- ओहने-ओहने लोक समाजकेँ दुइर करैए।

कृष्णानन्द- से केना?

सुनीता- जे आदमी ओहन पेट बनौत ओ ओते पुरौत केतए-सँ। जँ पुराइओ लेत तँ ओते पचबैओ लए ने ओते समय चाही। जँ खाइए-पचबैमे समय गमा लेत तँ काज करखन करत।

राजदेव- (कनी गरमाइत...) अच्छा बुच्ची, कृष्णानन्द कक्काकेँ चाह पिआबहुन?

सुनीता- अहूँ पिबै?

राजदेव- केना नै पिबै।

सुनीता- अहूँक पेट तँ गड़बड़े अछि। जँ कहीं औरो बेसी भऽ जाए?

राजदेव- से तँ ठीके कहै छह। मुदा ई केहेन हएत जे दरबज्जापर असकरे कृष्णानन्द चाह पीता आ अपने संग नै देबनि।

सुनीता- भाँज पुरबैले कम्मे कऽ लेने आएब। सेहो सरा कऽ पीब।
(सुनीता चाह आनए जाइत...)

कृष्णानन्द- कक्का, जेहो काज लोक नीक बुझि करैए, ओकरो तेना ने करए लगैए जे जेते नीक बुझि करैए ओइसँ बेसी अधले भऽ जाइ छइ। तैपर सँ अचार जकाँ रंग-बिरंगक चहटगर नवका-नवका काज।

राजदेव- नै बुझि सकलौं।

कृष्णानन्द- पहिने दू-सँझू बरियाती होइ छेलइ। जँ कहीं पहिल दिन अबेरो भऽ गेल आ कोनो तरहक गड़बड़ियो होइ छेलै तँ दोसर दिन सम्हारि कऽ सभ समेट सेरिया लइ छल।

राजेदव- जँ दू दिना काज एक दिनमे भऽ जाए तँ नीके ने भेल।

कृष्णानन्द- यएह सोचि ने एक-सँझू भेल। मुदा पाछूसँ तेहेन हवा मारलक जे कोसो भरि जाइबला बरियाती गाड़ी-सबारी दुआरे लग्नक समय टपा-टपा पहुँचैए।

राजदेव- हँ, से तँ होइए।

कृष्णानन्द- (सह पाबि सहटि) एतबो बुझैले लोक तैयार नै जे कोस भरि जाइमे आधा-पौन घन्टा पएरे लगत। तइ टपैमे चरि-चरि घन्टा देरी भेल, कहू जे केहेन भेल?

राजदेव- हौ, की कहबह। 'इस्की मुइला माघमे।' तेहेन-तेहेन नवकविरया मनुख सभ भऽ गेलहेँ, जे माघोमे गाम-गमाइत बिना चद्दरिए जाएत। आब कहह जे अपना ऐठामक विचारधारा रहल जे कोनो वस्तुक उपयोग जरूरत भरि करी। तैठाम जँ घरवैया अपन चद्दरि दइ छैन तँ अपने कठुएता, जँ नै दइ छैन तँ आनकेँ दरबज्जापर कठुआएब उचित हएत।

कृष्णानन्द- हँ, से तँ देखै छिऐ।

राजदेव- आब बरियातीएमे देखहक। पहिने दू दिना बरियातीक चलैन छल। जे एक-सँझू भऽ गेल। मूल प्रश्न अछि जे दुनू पक्षक (बर आ कन्या पक्ष) कि सभ क्रिया-कलाप

(बिध-बेवहार) छइ। केकरा सुधारैक, केकरा तोड़ैक आ केकरा बचा कऽ रखैक जरूरत अछि से नै बुझि, कविकाठी सभ समय नै बँचब वा समैक दुरूपयोग कहि एक दिना चलैन चलौलक। मुदा...।

कृष्णानन्द- मुदा की?

राजदेव- तहूँ तँ आब बच्चा नहियेँ छह। केते कठियारी गेले हेबह।

कृष्णानन्द- कक्का, मुरदा जरबए कठियारी जरूर गेलौं हेन, मुदा मुरदा..?

राजदेव- हँ, हँ, कठियारी गेलह। मुरदा जरबए नै?

कृष्णानन्द- एते तँ जरूर करै छी जे शुरूमे खुहरी चढ़ेलौं आ पछाइत पँचकठिया फेकि घरमुहाँ भेलौं।

राजदेव- तैबीच?

कृष्णानन्द- कनी बगलि कऽ बैस ताशो खेलाइ छी आ चाहो-पान करै छी।

राजदेव- मुदा, जे मुइला हुनकर जीता-जिनगीक चर्चक गबाह एकोटा नै रहै छी।

कृष्णानन्द- नै बुझलौं कक्का?

राजदेव- समाजमे केकरो मुइने लोककेँ सोग होइ छइ। सोगक समय मन नीक-अधला बीचक सिमानपर रहैए। जहिना ग्रह-नक्षत्रक बीचक सिमानपर कोनो नव चीज देखि पड़ैत तहिना होइए। एकठाम बैस जँ दस गोटेक बीच जीवन-मरणक चर्च भऽ गेल तँ ओ इतिहास बनि गेल। जइ अनुकूल आगू चर्च हएत।

कृष्णानन्द- मन थोड़े रहत।

राजदेव- मन रखए चाहबै तखन ने रहत। ओहुना तँ बिसरनहि छी। अपना ऐठाम मौखिके ज्ञान बेसी अछि। जे नीको अछि आ अधलो। अच्छा छोड़ह, बहकि गेलह।

कृष्णानन्द- हँ, तँ मुरदा जरबैबला कहै छेलिअ?

राजदेव- मुरदा जरबैकाल देखबहक जे चेरा जारनि एक भागसँ चुल्हि जकाँ नै लगौल जाइत अछि, एक्के बेर सौंसे शरीरक तर-ऊपर लगौल जाइए। मुदा मुर्दा सिकुड़ि-सिकुड़ि छोट होइत अन्तमे गेन जकाँ भऽ जाइए। जेकरा किछु जरौनिहार गेन जकाँ गुरका कऽ छोड़ि दैत अछि आ किछु गोटे ओकरो जरा दैत अछि।

कृष्णानन्द- अखन काजे जाइ छेलौं तँ सोचलौं जे कक्काकेँ समाचार सुनौने जाइ छिऐन। मुदा अहूँ तँ चहकल थारी जकाँ

झनझनाइते छी।

◌

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 1114

सातम दृश्य

(बालगोविन्दक दरबज्जा। चाह-पान, सिगरेट चलैत। बालगोविन्द आ राधेश्याम परसैत। भागेसर यशोधर एकठाम बैसल। बीचमे घटक भाय आ दोसर भाग समाजक रूपलाल, गरीबलाल, धीरजलाल बैसल।)

घटक भाय- कुटुम नारायण जेकरा जे जुड़वन लिखल रहै छै से भाइये कऽ रहै छइ।

यशोधर- हँ, से तँ होइ- छै, मुदा..?

रूपलाल- मुदा की?

यशोधर- लिखिनिहार के छैथ?

गरीबलाल- एना अनाड़ी जकाँ किए बजै छी। छठिहारे राति विधाता सभ किछु लिख दइ छथिन।

यशोधर- जँ वएह लिखै छथिन तँ एना उटपटांग किए लिखै छथिन।

धीरजलाल- कथी उटपटांग?
(चाहक गिलास आ पानक तसतरी लेने राधेश्याम जा

रखि पुनः आबि बैसैए)

यशोधर- एक तँ लेन-देन तेते बढ़ि गेल अछि जे जहिना चुमुक लोहा बीचक वस्तुकेँ नै पकैड़ लोहेटाकेँ खिंचैए तहिना पाइएबला नीक पाइ खर्च कऽ नीक घर (सुभ्यस्त) पकड़ैए भलेँ लड़का-लड़कीक जोड़ा बैइसै कि नै बैइसै।

घटक भाय- (मुड़ी डोलबैत) हँ, से तँ होइ छइ। मुदा किछु लाभो तँ होइ छइ।

यशोधर- की लाभ होइ छइ?

घटक भाय- जाति-पातिक (कुल-खनदानक) दबाएल लोक अपनासँ नीक घरमे पाइक बले कुटमैती कऽ लैत अछि।

यशोधर- तइ काल विधाता किछु ने सोचलैन जे कान्ही लगा जोड़ा लगैबतथिन। जइसँ जाति-पातिक रक्षा सेहो होइत।

घटक भाय- कुटुम नारायण जहिना मनुक्खोक मन सदतिकाल एके रंग नै रहैए तहिना ने हुनको (विधतोक) होइत हेतैन। जखन असथिर रहैत हेता तखन नीक विचार मनमे अबैत हेतैन आ जखन टेन्शनमे रहैत हेता तखन किछुसँ किछु कऽ दैत हेता।

गरीबलाल- घटक भाय, एहेन बात नै छइ। कोनो ई औझुका विचार छिऐ आकि पुरना विचार छिऐ। कहलो गेल अछि- ‘अजा पुत्रं बलिं दत्वा देवो दुर्बल घातकः।’

घटक भाय- छोड़ू ऐ सभ गपकेँ। ई सभ बैसारी कविकाठीक गप छी। जइ काजे एकठाम भेल छी पहिने एकरा निपटा लिअ। हमहूँ औगताएल छी, बजौनिहार दुआरपर आशा बाट तकैत हेता।

भागेसर- जिनगीमे पहिल बेर बेटाक बिआह करै छी। ओना समाजमे बहुत काज देखलौं हेन मुदा समाज की गामक सीमा भरिक अछि। जाति-जाति, कुल-खानदान, अड़ोसी-पड़ोसी, केते कहब। फाँकक-फाँक बनल अछि जइसँ एक काज (बिआह) होइतो एक रंग बेवहार नै अछि। तइसँ सभ दिना काज रहितो अपन बिध-बेवहार नीक-नहाँति नै बुझि पबै छी।

घटक भाय- हँ, से होइते अछि। अहाँ तँ अहीं भेलौं जे सालमे दस-बीस काजक अगुआइ करै छी तैयो केतेठाम भँसिया जाइ छी। खाएर, ऐ सभकेँ छोड़ू।

यशोधर- हँ, हँ। अपने काज आगू बढ़ाउ।

घटक भाय- जहिना शुभ-शुभ कऽ बिआहक चर्च उठल, आ अखन धरि चलि रहल अछि तहिना आगूओ चलैत रहए।

बालगोविन्द- लाख टकाक गप कहलिऐ घटकभाय। आगूक शुभारम्भ अहीं करियौ।

घटक भाय- देखू किछुए मास छोड़ि बिआहक दिन सभ मास होइए। मुदा सभसँ नीक मास फागुन होइए।

रूपलाल- ठीके कहलिअ, शिवरातिक मास सेहो छी।

घटक भाय- कोनो कि औगता कऽ कहलौं, से बात नै अछि। किछु सोचिए कऽ कहलौं। खरमास (बैसाख-जेठ) मे आगि-छाइक डर रहै छइ। जाड़मे जाड़ेक आ आन-आन मासमे सेहो किछु ने किछु गड़बड़ रहिते अछि।

यशोधर- जहिना नीक मौसम रहैए तहिना खेबो-पीवोक समान पर्याप्त रहैए। टेन्ट-समेनाक बदला गाछीओ-कलमसँ काज चलि जाइत अछि।

घटक भाय- की सबहक विचार अछि किने?

(सभ- हँ-हँ)

एकटा काज सुढ़िआएल। आब बरियातीक गप उठबै छी। की बालगोविन्द, कुटुम नारायणकेँ केते बरियाती अबैले कहै छिऐन?

बालगोविन्द- पाँचो गोटेसँ वएह काज होइए जे पान साए गोटेसँ।

तखन देखिते छी हम्मर आँट-पेट। कौआसँ खइर लूटाएब तइसँ नीक जे ओते बेटीए-जमाएकेँ अगुआ कऽ देब जे नै सभ दिन तँ किछुओ दिन सुख भोग करत।

यशोधर- बड़ सुन्नर बात बालगोविन्द बाबूक छैन। मुदा..?

गरीबलाल- कनी खोलि कऽ बजिऔ।

यशोधर- अहाँ समाजक बात नै जनै छी मुदा हमरा समाजमे एहेन अछि जे जातिमे घरही एक गोटे, परजातिमे हित-अपेक्षित आ परिवारक जे सम्बन्धी छैथ, से तँ एबे करता।

बालगोविन्द- एते तँ उचिते भेल।

गरीबलाल- उचित तँ कहि देलिऐ भाय, मुदा पैघ घोड़ाक पैघ छानो होइ छइ। अहाँ पचघारा छी मुदा जैठाम साए-दू-साए घरक होय तैठाम?

यशोधर- ई तँ ठीके कहलिऐ मुदा छोट-छीन काजक दुआरे समाज टुटि जाए, सेहो नीक नहियेँ।

घटक भाय- जेहने सबाल ओझराएल अछि तेहने सोझराएलो अछि।

यशोधर- से की?

घटक भाय- ओझरी दू रंगक होइ छइ। एकटा, जहिना टीक कि झोंटामे चिड़चिड़ी लगने होइत अछि आ दोसर, डोरीक भिड़ी जकाँ होइए। एकटा ओरी पकैड़ लिअ काज करैत चलू। कखनो कथीले ओझराएत। चाहे तँ काजे सम्पन्न भऽ जाएत वा डोरीए सधि जाएत।

गरीबलाल- बालगोविन्द भाय, उक्खरिमे मुड़ी देलौं तँ मुसराक डर। समाजक नीक लेल जँ अपन प्राणो गमबए पड़ै तैयो नीके। बिआह तँ समाजक उत्सव छी।

घटक भाय- एक लाखक विचार गरीबलालक छैन। एकठाम बैस खेलौं, रहलौं आ नीक-अधलाक गप-सप्प केलौं, ई उत्सव नै तँ की भेल।

यशोधर- घटक भाइक विचार टारैबला नै छैन।
(बिच्चेमे)

धीरजलाल- जखन उत्सव छी तखन नीक तँ नीक भेल मुदा अधला गप-सप्प किए करत?

घटक भाय- (ठहाका मारि) तूँ अखन अनाड़ी छह धीरज, मुदा जे बात उठौलह ओ आगू लेल काज औतह। तँए पहिने तोरे गप कहै छिअ।
(घटक भाइक विचार सुनि सभ साकांच भऽ घटक भाय दिस देखए लगैत...)

(मुँह चटपटबैत धीरजलाल किछु बाजए चाहैत की गरीबलालपर नजैर पड़ल। मुँहक बोल धीरजलाल रोकि लैत)

गरीबलाल- पहिने एकटा बात सुनि लिअ, तखन दोसर पुछहुन।

घटक भाय- बौआ, जहिना नीकक संग-संग अधलो चलैए तहिना अधलाक संग नीको चलैए। तँए दुनू गप चललासँ साधल बात लोक बुझैए।

धीरजलाल- गप झपाएल रहि गेल घटकभाय।

घटक भाय- अपना जनैत तँ कहि देलिअ। भऽ सकैए तूँ नै बुझने हुअह। देखहक पुरुष नारीक संयोगसँ सृष्टिक निर्माण होइए। जेकरा विवेकी मनुख बिआहक बन्हनमे बन्हलैन। जे सृष्टिक विकास आ कल्याण लेल उचित अछि।

धीरजलाल- हँ, से तँ अछिए।

घटक भाय- मुदा एकरे दोसर भाग देखहक। जे, बन्हनसँ बाहर अछि ओकरा अधला बुझि अंकुश लगौल गेल। मुदा समाजेक लोक ओकरा राँइ-बाँइ कऽ कऽ तोड़ि देलक।

धीरजलाल- नै बुझलौं भाय?

घटक भाय- पुरुष प्रधान बेवस्था ओकरा संग अन्याय केलक। एक दिस पुरुष केतेको नारीकेँ पत्नी बना, संग-संग समाजोमे कुचालि आन-आन नारीक संग चलैन शुरू केलक। जइसँ नारीक डाँड़, टुटि गेल। केते नारी घरसँ निकालल गेल। जे रने-बने बौआइत अछि।

धीरजलाल- भाय, मन तँ औरो गप सुनैक होइए। मुदा जइ काजे एकत्रित भेल छी से काज आगू बढ़ाउ।

राधेश्याम- मानि लेलौं, जेते बरियातीक खगता होनि तेते लऽ कऽ औता।

घटक भाय- बौआ राधेश्याम, नमहर काज करैमे ने औगताइ आ ने खिसिआइ। जखने अगुतेबह, खिसिएबह तखने काजमे खोंच-खाँच बनए लगतह। कोनो रोग असाध होइए तँ मनुखे ने ओकरो साधमे अनैए।

बालगोविन्द- बौआ, अखन तूँ समाजक तरी-घटी नै बुझबहक। एक तँ नवकविरया छह दोसर गाम छोड़ि परदेश खटै छह। जखन समाजक संग छी तखन वएह ने पारो-घाट लगौता। बेटी की कोनो हमरे छी आकि समाजक छिऐन।

घटक भाय- बालगोविन्द भाय, हमरा जे धौंजनि समाजमे होइए से केकरा होइ छइ। जँ एहेन धौंजनि दोसराकेँ होइतै तँ

पड़ा कऽ जंगल चलि जाइत। मुदा मोह अछि किने।

बालगोविन्द- की मोह?

घटक भाय- जइ काजे छी पहिने से फड़िआबह। एक समाजक दोसर समाजसँ मिलन समारोह छी। तँए सामाजिक काज भेल। तइले समाजो अपन रस्ता बनौनहि अछि। कियो भार पूरि, तँ कियो डाल पूरि, तँ कियो असिरवादी दऽ काज पूरबैए।

भागेसर- ऐ लेल चिन्ता करैक नै अछि घटकभाय। अपनो ऐठामसँ तँ डाला भार एबे करत किने। तइ लेल...।

घटक भाय- सभ कियो सुनि लेलिऐ किने जे बरपक्ष जेते बरियाती आनए चहता से मंजूर केलिऐन।
(सभ हँ, हँ)

राधेश्याम- (उछलि कऽ) मुदा एकटा बातक फड़िछौट अखने भऽ जाए।

घटक भाय- कथीक?

राधेश्याम- जेते खाइ-पिबैक ओरियान करबनि से खा-पी कऽ जाए पड़तैन।

गरीबलाल- से पहिने ने किए बरियातीक हिसाब जोड़ि लेब। जइ

हिसावसँ बरियाती औता तइ हिसाबसँ ओरियान करब। ने बाइस बँचत ने कुत्ता खाएत।

राधेश्याम- कक्का, दोसर बात कहलौं।

गरीबलाल- की?

राधेश्याम- तीन कोसपर गाम छैन। पाँच बजेमे जे पएरो चलता तैयौ आठ बजे आबि जेता। सभ काज सम्हरल चलतैन।

घटक भाय- बेस बजलह। खाइ-पीबैक जे समान दूइर हएत से मोटरी बान्हि कन्हापर लादि देबनि। अच्छा अखन एतै काजकेँ विराम दियौ।

यशोधर- बहुत समय लगि रहल अछि, जेते जल्दी काजक रूप रेखा बनि जाएत तेते नीक किने।

घटक भाय- हँ, हँ। से तँ नीक। मुदा जहिना कोनो वस्तुक बोझसँ चानि अगिया जाइत अछि तहिना ने विचारोक बोझसँ अगिया जाइत अछि। तँए आगूक विचार बढ़बैसँ पहिने एकबेर चाह-पान भऽ जाए।

गरीबलाल- बेस कहलिऐ घटकभाय।

बालगोविन्द- बाउ राधे, चाह बनौने आबह।

(राधेश्याम चाह आनए जाइत अछि।)

गरीबलाल- (मुस्की दैत) तैबीच किछु रमन-चमन भऽ जाए। अँए-औ घटक भाय, मझौरा बरियातीमे परूँका की भेल रहए?

घटक भाय- बिसरलो बात मन पाड़ै छी। नीकक चर्च लोक दोहरा-तेहरा करैए। अधला बात (काज) बिसरबे नीक।

गरीबलाल- अखन औपचारिक नै अनौपचारिक किछु भऽ जाए।

घटक भाय- (मुस्की दैत) देखियौ, सालमे दस-बीस बिआहक अगुआइ करिते छी मुदा ओहन तँ नै छी जे लुत्ती लगा देव आ ससरि जाएब। जइ काजमे हाथ दइ छी ओइ काजकेँ कैये कऽ छोड़ै छी।

यशोधर- की भेल रहए?

घटक भाय- जिनगीमे पहिल बेर एहेन फेरा लगल। कछुबीक बरियाती मझौरा गेल। ठीक आठ बजे बरियाती पहुँचल। घरवारियो सतर्क रहैथ। दरबज्जापर पहुँचते शर्बत चलल। शर्बत चलिते रहै कि स्त्रीगण सभ चंगेरामे दूबि-धान दीप लेने गीत गबैत पहुँचली।

यशोधर- से तँ होइते अछि।

घटक भाय- एतबे भेल। एक दिस बैसारमे बरियाती सभ गिलासपर गिलास शर्बत चढ़बैत तँ दोसर दिस गीतिहाइरो सभ गीतक वाण छोड़ैत। तखने एकटा परदेशिया करामात शुरू केलक।

यशोधर- की करामात?

घटक भाय- पहिने तँ नै बुझलिऐ मुदा पछाइत पता लगल जे ओ बरियातीए रहए। केलक ई जे गीतिहारिक बीचमे पाइ (एक-दू आ पाँचक सिक्का) लुटबए लगल। गीतिहारिक बीच हुड़ भेल। एक्के-दुइए चारि बेर पाइ फेकलक। झल-अन्हार रहबे करै।

यशोधर- से एना किए केलक?

घटक भाय- सएह ने, केतए-सँ सीखि कऽ आएल रहै से नै कहि। पाइ बीछैमे गीतो बन्न भऽ गेल। तैपर सँ तेना ने तरा-ऊपरी लोको खसए लगल आ धक्का-धुक्की सेहो हुअ लगल। दुबि-धान, दीपबला चंगेरा बरक उपरेमे खसल।

गरीबलाल- जे एहेन किरदानी केने रहै तेकरा पकैड़ कऽ धोलाइ नै देलक।

घटक भाय- ओहो कि अनाड़ी-धुनाड़ी रहै। लुत्ती लगा ससरि कऽ

कातमे नुका रहल। घरवारी सभ जखन गीतिहारि सभकेँ पुछलकैन तँ ओ सभ हरिअरका कुरताबलाक नाओं कहलखिन। ओ सभ भँजियाबए लगल। मुदा कुत्ता केतौ आगिमे झरकै।

गरीबलाल- तइमे अहाँ केना फँसि गेलिऐ?

घटक भाय- हमरो कुर्त्ता हरियरे रहए। मुदा आब बुझै छी जे गलती कनी अपनो रहए।

गरीबलाल- की गलती अपन रहए?

घटक भाय- अपन गलती यएह रहै जे बरियातीक बीचक नहि कतका कुरसीपर बैसल रही। तीनि-चारि गोटे कातेसँ हियबैत रहै। हरिअर कुर्ता देखि लगमे पहुँच गेल।

यशोधर- अहाँ नै बुझलिऐ।

घटक भाय- से कि कोनो देखलिऐ नहि। भेल जे किछु परसऽ आएल अछि।

यशोधर- किछु पुछबो ने केलिऐ?

घटक भाय- की पुछितिऐ, कोनो शंका रहए। ओहो सभ कि पुछलक। हाँइ-हाँइ कऽ ठुस्से चलबए लगल।

गरीबलाल- (ठहाका मारि...) बेसी ने तँ लगल।

घटक भाय- कोनो कि अनाड़ी-धुनाड़ीक ठुस्सा रहए। पाँचे-सात ठुस्सामे तँ बुझि पड़ल जे दिनका तरेगन देखै छी।

यशोधर- बरियाती सभ खाइए टाले गेल रहए।

घटक भाय- नै, परोछक बात छी, झूठ नै बाजब। बरियातीओ सभ तनला। मुदा हमहीं रोकलयैन।

गरीबलाल- अहाँ किए रोकलयैन?

घटक भाय- मारि-दंगा कोनो नीक छी। कोनो ठेकान छै जे केते हएत। जँ एहेन भऽ जाए जे काजे नाश भऽ जाए, तखन।

गरीबलाल- हँ, से तँ ठीके।

घटक भाय- ओना पाँचे-सात ठूस्सा ने लगल। जँ दोहराइत तँ बेसियो लगि सकै छेलइ। तहूमे जहिना हौहटि-कलकैल साले-साल ओही आदमीक ऐठाम अबैत जेकरा ऐठाम खाइ-पिबैक आ सुतै-बैसैक नीक जोगार देखैत। तँए सोचलौं जे कनी सहिये लेने नीक रहत।
(तस्तरीमे चाह लेने राधेश्याम आबि चाह परसैए...)

गरीबलाल- तरे-तर घटक भाय मुस्की मारै छैथ।
(गरीबलालक बात सुनि सभ घटक भाय दिस ताकए लगै छैथ। अपना दिस तकैत देखि घटक भाइक मुस्की-हँसीमे बदैल गेलैन।

बालगोविन्द- घटकभाय, किछु बजता।

घटक भाय- एकटा आरो घटना मन पड़ि गेल। बरख पाँचे भेल हएत। तमोरियाक कुटुमैती अरड़ियामे भेल रहए। दुनूक अगुआ रही। दुनू चिन्हार।

बालगोविन्द- भेल कथी से कहियौ।

घटक भाय- ओइ काजमे दोखी घरबैइए रहए। नाहकमे दोखी बनलौं।

गरीबलाल- की भेल रहए?

घटक भाय- गरीबलाल एक रत्ती तल-बितल भेने काज विगड़ि कऽ की-सँ-की भऽ जाइए। एते दिन देखै छेलिऐ जे दोकानदार सभ माथपर नूनक मोटरी आनि जीबैले कारोबार करै छल। आब देखै छी जे कारोबारीए सभ राजा भऽ गेल। जे जेना मन फुड़ै छे से तेना करैए।

गरीबलाल- जे बात कहै छेलिऐ, से कहियौ।

घटक भाय- ओइठीन देखौलक कोनो लड़की आ सिनुरदानक बेर दोसर लड़कीकेँ आनि सिनुरदान करबै लगल।

गरीबलाल- ओइठाम तँ बर पक्षक नै रहै छैथ तखन केना भाँज खुगल।

घटक भाय- सभ गप देखनिहार तँ घरपर बाजि चुकल छला ने। लड़कीक हुलिया भऽ गेल छेलै ने। ओही अनुमानसँ लड़का पकैड़ लेलक। कोनो लाथे निकलल आ पित्तीकेँ कहि देलक।

गरीबलाल- तखन तँ बड़का सरेड़ा भेल हएत?

घटक भाय- सरेड़ा कि सरेड़ा जकाँ भेल। मारि-पीट जे भेल से तँ भेबे कएल जे तीन बरख तक दुनू गामक सीमा रोका गेल। बिआह बेटा-बेटीक खेल नै दुनूक जिनगीक छी। ओना तेहेन जुग-जमाना आबि गेल अछि जे खेलोसँ खेल जिनगी बनि गेल अछि।

गरीबलाल- कनी फरिछा कऽ कहियो घटकभाय?

घटक भाय- की फरिछा कऽ कहब। अन्तिम समय विद्यापतियो लिखलैन- 'माधव हम परिणाम निराश।' तहिना छातीपर हाथ रखि आनो-आन बाजैथ। अच्छा अखन एतै विराम दियौ। खाइ-पिबैक बेरो भऽ गेल आ देहो-हाथ अकैड़

गेल।

राधेश्याम- तीमनो-तरकारी ठरि कऽ पानि भऽ गेल हएत।

घटक भाय- कुटुम नारायण तँ ठरलो खा कऽ पेट भरि लेता मुदा हमरा तँ कोनो गंजन गृहणी नहियेँ रखती।

◌

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 2082

आठम दृश्य

(बालगोविन्दक दरबज्जा। बालगोविन्द, भागेसर आ यशोधर बैस खेती-पथारीक गप करैत...)

बालगोविन्द- देखले दिनमे दुनियाँ केतए-सँ-केतए भागि गेल।

यशोधर- से की?

बालगोविन्द- अपना ऐठामक किसान खेती-गिरहस्तीक सभ कथुक बीआ अपने बनबै छला खेती करै छला। तीन सालसँ जे सुनै छी, से की कहूँ।

यशोधर- खोलि कऽ कनी कहियौ?

बालगोविन्द- तेसर साल हमरा गाममे बहुत गोटे तीन साए रुपैए किलो मकइओक आ धानोक बीआ, पँचगुना उपजा कहि कऽ अनलैन। खेती केलैन। शुरूहेमे ढक-बरवारी सभ बनबा-बनबा रखलैन। ले बलैया मकैमे बाइले ने लगल।

यशोधर- से की भेलै?

बालगोविन्द- जहिना रिनिया-महाजन अगर-मगर करैत रहता तहिना सभ गिरहस्त अपनेमे कहा-कही शुरू केलैन।

यशोधर- की कहा-कही शुरू केलैन?

बालगोविन्द- कियो कहथिन जे खाद जे देलिऐ से माटि जाँच करौलिऐ? तँ कियो बाजैथ जे जेते पावरक दबाइ फसिलमे दइ छेलिऐ तइसँ बेसी पावरक देलिऐ की कम? तँ कियो बाजैथ जे बीआ बाग करैसँ पहिने दबाइ मिलौलिऐ। की कहब उपजाक बात बिसैर सभ अपनेमे सालो भरि रक्का-टोकी करैत रहला।

यशोधर- तब तँ बाढ़ि रौदीक संग तेसरो आफत आबि गेल।

बालगोविन्द- तेसरे किए कहै छिऐ। चारिमो ने कहियो।

यशोधर- चारिम की?

बालगोविन्द- अहाँ सभ दिस नहर नइए तँए ने नजैरपर आएल हेन। हमरा सभ दिस केहेन खेल होइए से सुनू। जखन खूब बरखा हएत तखन नहैरिक मुँह (फाटक) खोलि देत आ जखन रौदी हएत तखन कहत जे नहैरमे पानियेँ ने छइ।

यशोधर- जेना अपना ऐठम पढ़ल-लिखल लोक छैथ तेना जँ दसो प्रतिशत बुधिक (ज्ञानक) उपयोग अपना क्षेत्र लेल लगैबतैथ तँ की-सँ-की देखतिऐ। मुदा जेकर कपारे फुटि जाएत तेकर केते भरोस।

(राधेश्याम चाह लेने अबैए। तहिकाल गरीबलालक संग

घटक भाय सेहो अबै छैथ...)

भागेसर- घटको भाय आबिए गेला।

घटक भाय- चाहमे हमरो अंश छल तँए दुनूक मिलानी भेल। दाना-दानामे खेनिहारक अंश लिखल अछि मुदा..?

गरीबलाल- घटकभाय, अहाँमे यएह अवगुन अछि जे करैले जाइ छी कोनो काज आ करए लगै छी कोनो काज। जइ काजे एलौं तेकरा पहिने सोझराउ। दोसरो काज करए जाएब।

घटक भाय- अखन तँ सभ जुटबो ने केला अछि तैबीच काजक चर्च उठाएब नीक हएत।

गरीबलाल- जँ ओ लोकैन नै आबैथ तँ छोड़ि देब नीक हएत।

घटक भाय- (मुड़ी डोलबैत) कहलौं तँ बेस बात, मुदा जमात करए करामात।

गरीबलाल- ई तँ ठीके कहलिऐ मुदा जमातसँ पहिने जमात बनैक प्रक्रियापर नजैर दिअ पड़त।

घटक भाय- से की?

गरीबलाल- जहिना बड़का आम सरही होइत-होइत बीजू बड़बड़िया

भऽ जाइए। तहिना बिज्जुओ बनैत-बनैत बड़का फैजली-सजमनिया बनि जाइए। तहिना छी जमात। बनैत-बनैत बनत आ मेटाइत-मेटाइत मेटाएत। सामाजिक काज छोड़ि सभ अपना नून-रोटीमे लगि समाजकेँ तहस-नहस कऽ देने अछि तैठाम जमात तकने काज चलत।

घटक भाय- बेस बजलौं गरीबभाय। एकटा बात मन पड़ल। पड़ोसिया गाममे रारूपक माए मरल। अज-गजबला लोक भोज केलक। गामे-गाम एकघारा-दूघारा जाति। एगारह गाममे तीन साए एगारह पंच भेल।

गरीबलाल- फेर अहाँ बौआए लगलौं।

घटक भाय- बौआइ कहाँ छी। ऐगला बात सुनि ने लियौ। गेलौं तमोरिया स्टेशनपर टहलए। रामरूपक बेटाकेँ आ गनोरक बेटाकेँ झगड़ा करैत देखलौं। बच्चा बुझि दुनूकेँ छोड़बैत पुछलिऐ जे किए झगड़ा करै छह। गनोरक दादीक सराधक भोज सेहो भेल। ओकाइत तँ एकरंगाहे दुनूक। ओ दुइए गामक भोज केने रहए। दुइए गाममे तोहर साए पंच भेल। तहीले झगड़ा।

गरीबलाल- (मुस्की दैत) अनकर झगड़ा अपना कपारपर लऽ लेलौं।

घटक भाय- लेलौं कि लेला जकाँ। बकार बन्न भऽ गेल। भीतरे-भीतर

मन खिसिया कऽ कहए जे अनेरे अनकर झगड़ा अपना सिर बेसाहि लेलौं। भने अलकतरा बैसाएल प्लेट-फार्म छइहे दुनू फरिछा लिअ। मुदा सेहो आब केना हएत।

गरीबलाल- फेर केलिऐ की?

घटक भाय- कहलिऐ जे बौआ ताबे थमहह। कनी बैंकक काज अछि। हूसि जाएत। ई तँ कनी अगाइत-पछाइत भऽ सकैए मुदा ओ (बैंक) तँ नै हएत।

गरीबलाल- मानि लेलक दुनू?

घटक भाय- बानरक बटबारा (पनचैती) भऽ गेल। जहिना रोटी बरबरि करैमे सौंसे रोटी बानर खा गेल तहिना हुअ लगल।

गरीबलाल- से की?

घटक भाय- एक्के बात एक गोटे मानि लिअए तँ दोसर तत्-मत् करैत अगर-मगर करैत, कोना-छिन्ना निकालि सबाल उठा दिअए। मुदा हमरो बहाना तँ भरिगर रहए तँए हड़बड़ करैत किछु कहबो करिऐ किछु नहियोँ कहिऐ।

गरीबलाल- दुनूक नजैर केहेन रहए?

घटक भाय- दुनूक नजैर जेते चढ़ल बुझि पड़ै ओतबे उतरलो। तइसँ शंका हुअए जे परोछ भेलापर कहीं फेर ने फँसि जाए। फेर हुअए जे पनचैती भेने सोलहो आना तँ नहियेँ फरियाएत। ओ जँ फरियाएत तँ अपने दुनूसँ।

गरीबलाल- जे नीक होइत से ने करितौं।

घटक भाय- जाबत बरतन ताबत बरतन।

गरीबलाल- से की?

घटक भाय- जाधरि धोती वा साड़ी सीओ कऽ काज चलैए ताधैर एकटा समस्या (धोती कीनैक) तँ हटल रहैए।

गरीबलाल- मुदा धोतीक जरूरत तँ सबदिना छी, केते दिन टारल जा सकैए।

घटक भाय- हँ, से तँ छी। मुदा कोनो काजो करैक (धोतीओ कीनैक) तँ अनुकूल समय होइत अछि। अच्छा छोड़ू ऐ गपकेँ। ओ सभ जँ नहियोँ एला तँ की हेतइ। नै पान तँ पानक डन्टीए-सँ तँ काज चलिए जाइ छइ। घुमा-फिरा कऽ सभ तँ छीहे।

गरीबलाल- हँ, से तँ छी मुदा दाउ-गिरकेँ कोनो गर भेटक चाही।

घटक भाय- से कि कोनो तेहेन काज छी। दुइए परिवारक काज छी जँ दुनू राजी-खुशी सहमत भऽ करैथ तँ तेसरकेँ की चलत।

भागेसर- हमरो समय बहुत लगि गेल। एक घन्टाक काजमे जे दिनक दिन लगा देब सेहो नीक नहि। तहूमे काजक दौर छी साइयो रंगक जोगार-पाती करए पड़त। जँ अहिना समय लगैत गेल तखन बान्हल दिन (निर्धारित समय) मे काज केना हएत?

गरीबलाल- हँ, शुरूहे लग्नमे काज हेबाक चाही चिक्कन-चुनमुन तँ पछाइतो भऽ सकै छइ। ओना अपनो चलैत-चलैत चिक्कन भऽ जाइए।

बालगोविन्द- घटकभाय, जखन एते गप भाइये गेल तखन एक-सँझू बरियाती रहता कि दू-सँझू आकि तीन-सँझू।

घटक भाय- (मुड़ी डोलबैत) हमर नजरिये नै ओम्हर गेल छल मुदा ईहो तँ दमगरे सबाल अछि।

राधेश्याम- जखन सगतरि सभठाम एक-सँझू भऽ गेल तखन दू-सँझू तीन-सँझू अनेरे चलाएब छी।

घटक भाय- बौआ कहलह तँ बड़ सुन्नर बात मुदा तोहीं कहह जे जखन बरियाती पहुँचैए तखन शर्बत ठंढा-गरम, चाह-

पान, सिगरेट गुटका चलैए। तैपर सँ पतोरा बान्हल जलपान, तैपर सँ पलाउओ आ भातो, पूड़िओ आ कचौड़ियो, तैपर सँ रंग-बिरंगक तरकारियो आ अचारो, तैपर सँ मिठाइओ आ माछो-मासु, तैपर दहीओ, सकरौड़ियो आ पनीरो चलैए।

राधेश्याम- किए एते जोड़बै छी?

घटक भाय- जोड़बै कहाँ छिअ। जे चलैए से कहै छिअ। आब तोहीं कहह जे एक दिनक खेनाइ एते भेल?

राधेश्याम- नै केना भेल? कियो कि मोटरी बान्हि घरपर लऽ जाइ छैथ आकि पेटेमे दइ छथिन।

घटक भाय- दइ तँ छथिन पेटेमे मुदा जँ सभ दिन अहिना देथिन तँ कोरोओ-बत्ती घरमे रहतैन आकि ओहो पेटेमे चलि जेतैन। नै जँ एहने हाथी सन सभ भऽ जाए तँ हरबहना बड़द केतए-सँ आनब। हाथीसँ बड़ काज लेब तँ देह-हाथ डोलबैत सबारी करब।

गरीबलाल- (मुस्कियाइत) सबारियो तँ जरूरीए अछि?

घटक भाय- (खिसिया कऽ मुदा हँसैत...) सबारियो नीक लगै छै समैए पाबि कऽ। भरि दिन जँ खलासी-डरेबर जकाँ सबारीए कसने रही तँ डरेबरे-खलासी हएब आकि यात्रा

केनिहार यात्री।

गरीबलाल- केते दूर यात्रा करैक अछि जे लोक यात्री बनि चलत। ‘मियाँ दौर महजिद।’

बालगोविन्द- ‘गरीबलाल अहाँकेँ कचकचबै छैथ घटकभाय। अहूँ तेहने छी जे सभ गपकेँ धइए लइ छिऐ। जइ काजे सभ एकत्रित भेलौं तेकरा आगू बढ़ाउ।

घटक भाय- (सह पाबि...) केतबो गरीबलाल कचकचेता तइसँ की हम कब-कबा जाएब। गरीबलाल एक घाटक पानिक सुआद बुझै छैथ। हमरा जकाँ सतरह घाटक सुआद थोड़े बुझथिन।

राधेश्याम- एक-सँझू नीक आकि दू-सँझू आकि ओइसँ बेसी।

घटक भाय- बौआ, सँझूकेँ दिना बना दहक। एक दिना कि दू दिना आकि तीन दिना। जँ तीन दिना भेल तँ बहत्तरि घन्टाक चक्र भेल। चौबीस घन्टाक दिन होइए तँ एक चक्रमे अनेक अछि। किछु छोड़ि किछु जोड़ि आ किछु सुधारि एक चक्रमे आनल जा सकैए।

गरीबलाल- आब की पहुलका जकाँ लोककेँ ओते पलखति छै जे पएरे बत्तीस-बत्तीस कोस भोज खाइले जाइत। एक दिना बढ़ियाँ।

घटक भाय- गरीब लाल, साँपोसँ टेढ़-बौकली लोकक चालि छइ।

गरीबलाल- से की?

घटक भाय- एक दिनोकेँ एक रतुक बना देलक।

गरीबलाल- चौबीस घन्टाकेँ बारहमे बाँटल जा सकैए किने?

घटक भाय- बँटैक तराजुए ढील-ढिलाह अछि। करवनो कऽ डोरी ओझरा जाइ छै तँ बेसीए जोखा जाइ छै आकि कम्मे जोखाइ छइ।

गरीबलाल- से की?

घटक भाय- एक तँ भगवानेक काज आ बोलमे अन्तर छैन दोसर मनुख तँ आरो पँजिया कऽ लिड़ी-बीड़ी करैए।

गरीबलाल- से की?

घटक भाय- कनी नजैर उठा कऽ देखबै तँ बुझि पड़त जे कोनो मासक दिन नमहर भऽ जाइए आ कोनो मासक राति। तखन केना अदहा-अदहीमे बँटबै।

गरीबलाल- एकरा छोड़ू। दोसरपर आउ।

घटक भाय- (मुँह बिजकबैत...) मनुख तँ मनुखे छी। एतबो होश नै जे रतुका यज्ञ संध्याक गीतसँ शुरू होइत अछि आ दिनुका परातीसँ। से होइए कि से तजबीज केलिऐ हेन?

गरीबलाल- नै?

घटक भाय- तेज सबारी भेने तीन कोसक बरियाती तीन बजे भोरमे पहुँचैए। आब अहीं कहू जे पराती बेरमे संध्या होइ। तैपर सँ दिनका यज्ञ मानबै आकि रतुका।

गरीबलाल- एहेन जंगल-पहाड़ काटि सड़क बनौल हएत।

घटक भाय- (मुस्की दैत) नै किए हएत। अनजान-सुनजान महाकल्याण। जे नीक बुझिमे औत सएह ने नीक भेल। तहूमे असगर-दुसगरमे गड़बड़ाइओ सकैए मुदा पाँच गोटे बैस जँ विचार करब तँ कनी-मनी झुस-झास भऽ सकैए।

राधेश्याम- जँ शुभ लग्नमे बिआह नै हएत तँ बरियाती सभ मारि खेता।

घटक भाय- जहिना टायरगाड़ीक बड़दकेँ आनो-आनो गामक खच्चा-खुच्ची आ बान्ह-सड़क टपैक भाँज बुझल रहै छै तहिना ने छी। खाएर शुभ-शुभ कऽ काज सम्पन्न हुअए।

गरीबलाल- घटकभाय, अपना सभ समाज छी किने? सामाजिक बन्हनमे बान्हि जिनगीक अंग छी। मुदा परिवारक काजक भार तँ परिवारेपर रहतैन।

घटक भाय- रहबे करितैन किने। समाज परिवारक बीच जे सम्बन्ध छै तेकरे पहरुदार छी किने? नीक करता नीक कहबैन अधला कऽ अधलो कहबैन आ सजाएओ देबनि।

बालगोविन्द- (मुस्कियाइत) जहिना अखन धरि सभ काज शुभ-शुभ कऽ चलि रहल अछि तहिना आगूओ चलैत रहए।

भागेसर- नचारीए बिआह कऽ रहल छी। तँए..?

बालगोविन्द- केते दिनसँ पत्नी बिमार चलि रहल छैथ। बाहरक काज अपने सम्हारि लइ छी, मुदा घर-अँगनाक काज राइ-छित्ती होइए।

घटक भाय- बालगोविन्द, जहिना संगीक काज नीक-अधलामे संग देब छी तहिना ने सरो-समाज आ कुटुमो-परिवार छी। जेते जल्दी सम्हारि सकी ओते जल्दी सम्हारि लिअ। आठम दिन सेहो नीक लग्न अछि। जँ सम्हरि जाए तँ सम्हारि लिअ।

बालगोविन्द- बड़बढ़ियाँ।

पटाक्षेप।

शब्द संख्या : 1566

नअम दृश्य

(राजदेवक दरबज्जा। नजैर निच्चाँ केने कुरसीपर राजदेव मने-मन किछु सोचबो करैत आ कखनो कऽ दहिना हाथ उठा आँगुरपर हिसाब जोड़ए लगैत। बजैत तँ नै मुदा ठोर पटपटबैत।)

सुनीता- बिनु दूधेक चाह छी। कहुना कऽ पीब लिअ।

राजदेव- दूध नै छेलह।

सुनीता- अमरस्साक समय छी, फाटि गेल।

राजदेव- दूध फाटि गेलह तँ नेबोए दऽ देलहक ने। अच्छा जे छह सएह नीक। एते दिन चाह पेय छल आब तँ अम्मल बनि गेल। नै पीने मने ढील भऽ जाइए। उत्तरबारि टोल दिससँ जनीजातिक जेर अबैत देखने छेलिऐ। से केतए-सँ अबै छेलइ?

सुनीता- हकार पुरि कऽ।

राजदेव- कथीक हकार। केकरा अइठीनसँ।

सुनीता- भागेसर कक्काक बेटाक बिआह भेलैन, वएह कनियाँ

देखि-देखि अबै छेलइ।

राजदेव- बियाहै जोकर बेटा कहाँ भेल छेलइ?

सुनीता- बिआहोक कोनो सीमा-नाँगैर छइ। देखबे करै छिऐ जे कोनो-कोनो जाति छेटगर बेटा-बेटी भेने बिआह करैए आ कोनो-कोनो जाति बच्चेमे कऽ लइए।

राजदेव- हँ, से तँ देखै छिऐ। तोहू तँ आब बच्चा नहियेँ छह, कौलेजमे पढ़ै छह। दुनूमे नीक कोन?

सुनीता- दुनू नीको अछि आ अधलो।

राजदेव- से केना?

सुनीता- जुआन बेटा-बेटीक बिआह ऐ दुआरे नीक अछि जे अपन भार उठा चलै जोकर भेल रहैए।

राजदेव- हँ, से तँ रहैए। फेर अधला केना भेल?

सुनीता- जेतेक जे भार उठा कऽ चलैक चाही से नै चलैए, तँए अधला।

राजदेव- तूँ तँ किताबक भाषामे बुझबै छह। कनी विलगा कऽ कहह।

सुनीता- एक ध्रुव (एक सीमा) देश-दुनियाँक अछि आ दोसर ध्रुव (दोसर सीमा) परिवार आ बेकतीक। आजुक जे परिवारक रूप-रेखा बनि रहल अछि ओइमे सभ छुटि रहल अछि। सिकुड़ि कऽ लोक तेते छोट परिवार बनबए चाहैए जे मनुखक सम्बन्धे चौराहापर ढेड़ियाएल गाड़ी-सबारी जकाँ भेल जा रहल अछि।

राजदेव- फेर किताबेक भाषा बाजए लगलह।

सुनीता- नहि। परिवारमे मनुखक जनम होइत अछि। माए-बाप जनमदाता होइ छथिन। मुदा भऽ की रहल अछि जे या तँ विचारे वा लड़ि-झगैड़ माए-बाप छोड़ि परिवार फुटा लइए। जहिना सोनक सूत मिला कऽ सक्कत जौड़ बनि जाइए। जइसँ भारी-भारी बोझ बान्हल जा सकैए ओइ जौरकेँ उधाड़ि वा तोड़ि एक-एक रेशाकेँ बेरैबते एते कमजोर बनि जाइत अछि जे कोनो काजक नै रहैत। तहिना भऽ रहल अछि।

राजदेव- (मुड़ी डोलबैत...) कहै तँ छह ठीके, मुदा..?

सुनीता- मुदा-तुदा किछु ने। सोझ रस्ता बनि रहल अछि। जे बेटा-माए-बाप, परिवार छोड़ि सकैए ओ समाज, देश-दुनियाँकेँ केना पकैड़ सकैए। जँ से तँ मातृभक्त, पितृभक्त, समाजभक्त, देशभक्त बनि केना सकैए।

राजदेव- (मुड़ियो डोलबैत आ कनडेरीए आँखिए सुनीताकेँ देखबो

करैत...) ठीके कहै छह। अच्छा बाल-बिआहकेँ केना-नीक आ केना अधला कहै छहक।

सुनीता- बाल-बिआहक परिस्थिति भिन्न अछि। जे परिवार सम्पन्नताक (आर्थिक) दृष्टिएँ जेते अगुआएल अछि ओ ओते बाल-बिआहसँ दूरो अछि। मुदा जे परिवार जेते पछुआएल (आर्थिक दृष्टिए) अछि ओइमे ओते बेसी छइ।

राजदेव- किए?

सुनीता- अपना सबहक समाजो, परिवारो आ बेकतीओ वैदिक रीति-नीतिसँ बनि चलैत आबि रहल अछि। जइमे ढेरो दाउ-घाउक संग हवो-बिहाड़ि लगैत आएल अछि। बालो-बिआहक पाछू सएह कारण अछि।

राजदेव- कनी बिलगा कऽ कहह।

सुनीता- जिनगीक उतार-चढ़ाव होइ छइ। जेना बच्चाक सेवा माए-बाप करैए तखन ओ अपन जिनगी सम्हारै जोकर नै रहैए। जखन बेटा-बेटी जुआन (कमाइ-खटाइबला) होइत अछि आ माए-बापक लौटानी अबैए। तखन सहाराक जरूरत होइ छइ। जहिना दुनियाँमे मनुखकेँ एबा काल (बच्चा) दोसराक सहाराक जरूरत होइत अछि तहिना जेबोकाल होइत अछि।

राजदेव- (मुड़ी डोलबैत...) हँ, से तँ होइते अछि। हमहीं छी जँ तूँ सभ नै देखबह तँ केतेक दिन जीब।

सुनीता- वएह माए-बाप अपन आचार-विचार निमाहैत बेटा-बेटीकेँ दोसराक अंग (संगी) लगा अपन भार ढील कऽ लैत अपनाकेँ बेटा-बेटीक रीनसँ उरीन हुअ चाहैत।

राजदेव- एते औगता कऽ किए उरीन हुअ चाहैत। जखन कि दुनू अखन आश्रिते अछि।

सुनीता- जैठाम जिनगी जीवैक ने साधन अछि आ ने खोज-खबड़ि लेनिहार तैठाम लोक अपनापर केते भरोस करत। कियो सुखे (सुख रोग भेने) उपास कऽ देवमंदिरमे पूजा करए जाइए तँ कियो दुखे (नै रहने) साँझक-साँझ, दिनक-दिन उपास करैत भोलाबाबाकेँ नचारी सुनबैए। खाएर छोड़ू। अपन दुख-धंधा सोचू।

राजदेव- तहूँ दुनू माए-धी जा कऽ देखि अबिहह।

सुनीता- हकार अबैत तब ने जइतौं। बिनु हकारे...। जँ पुछि दिअए जे..?
(कृष्णानन्दक प्रवेश)

कृष्णानन्द- कक्का, नजैर उतरल (सोगाएल) बुझि पड़ैए। किछु होइए

की?

राजदेव- बौआ कृष्ण, केकरा कहबै के सुनत। अपने दुनू गोटेक परिवार अछि, सातपुस्तसँ अपेच्छा अछि। मन रखैबला एकोटा बात नै भेल। तोरा देखि कऽ खुशी होइए। मुदा...।

कृष्णानन्द- निराश जकाँ किए बजै छी कक्का?

राजदेव- तीर जकाँ पोतीक बात छेदने अछि। मन कलैप रहल अछि जे आब किछु करै जोकर नै रहलौं आ जखन करैबला छेलौं तखन...।

कृष्णानन्द- की तखन?

राजदेव- की कहबह। एक्के बेर कहि दइ छिअ जे अपन गाछी भुताहि भऽ गेल।

कृष्णानन्द- कनी खोलि कऽ कहबै तखन ने बुझबै। चिक्कारी तँ कविकाठीक भाषा छिऐ। भलें उनटे किए ने बुझिऐ।

राजदेव- भागेसर बेटाक बिआह केलक। एते दिन कनियाँ देखैक हकार आँगनमे अबै छेलैन। जाइ छेली आ असीरवादो दइ छेलखिन। कियो तँ अपना भाग-तकदीरे जनम लइए। तइ सूत्रे सामाजिक सम्बन्ध तँ छल। मुदा

अनका-अनका हकार देलक आ...।

कृष्णानन्द- कक्का, भागेसर भैया कोनो सुखे बेटाक बिआह केलैन।

राजदेव- (औगता कऽ) तँ..?

कृष्णान्नद- केते माससँ भौजी ओछाइन पकड़ने छथिन। भानसो-भातमे दिकते होइ छैन। ई तँ ओही वेचाराकेँ धैनवाद दिऐन जे भौजीकेँ जिआ कऽ रखने छैथ। हमरा अहाँ घरमे होइत तँ टाँग पकैड़ फेकि गंगा लाभ कऽ अबितौं।

राजदेव- जखन समाजसँ टुटि रहल छी तखन...।
(एकाएक चुप भऽ जाइत। आँखि उठा कखनो सुनीतापर तँ कखनो कृष्णानन्दपर दैत। तहिना कृष्णानन्दो कखनो राजदेवपर तँ कखनो सुनीतापर आ कखनो मेघ दिस ऊपर देखैत तँ कखनो निच्चाँ दिस। तहिना सुनीतो।)

सुनीता- बाबा, बाबा!!

(आँखि उठा राजदेव सुनीतापर दऽ पुन: निच्चाँ धरती दिस देखए लगैत। दुनू हाथसँ आँखि पोछैत, भरियाएल अवाजमे...)

राजदेव- बुच्ची सुनीता आ बौआ कृष्ण, दुखे कि सुखे जेते दिनक

दाना-पानी लिखल अछि से तँ भोगबे करब। मुदा...।

सुनीता- मुदा की?

राजदेव- आन कियो किए मन राखत मुदा तूँ दुनू गोटे तँ लगक भेलह। तँए किछु कहि दइ छिअ।

कृष्णानन्द- बितलेहे जिनगीक कथा ने इतिहास छी।

राजदेव- हमरा जकाँ बाबाकेँ एते अज-गज नै रहैन। मुदा समाजमे एहेन प्रतिष्ठा बनल रहैन जे जहिना कोनो पाखरि वा इनारक पानि सटल रहैए, तहिना रहैन। खेत-पथार, वाड़ी-झाड़ीसँ काज कऽ आबैथ आ लोटा लेने मैदान दिस विदा होथि। जैठाम जेत्तै कियो भेट जान्हि तेत्तै गामक चर्च उठा बैस जाथि। जेना सौंसे गाम इस्कूले होइ।

सुनीता- की चर्च उठबथिहिन।

राजदेव- से कि बुझल अछि। ताबे हमर उदैओ-प्रलय भेल रहए आकि नहि।

सुनीता- तखन केना बुझलिऐ।

राजदेव- साँझु पहरकेँ दादी अँगनामे बिछान बिछा दइ छेलखिन आ बाबाक खिस्सा कहै छेलखिन। एक दिन पूछि

देलिऐन जे बाबी बाबासँ झगड़ो करिऐन?

सुनीता- की कहलैन?

राजदेव- पहिने तँ भभा कऽ हँसली। मुदा जहिना तेल वा दूध हरा जाइ छै जेकरा आँगुर-तरहत्थीसँ हिलोरि-हिलोरि बासनमे रखल जाइए। तहिना दादियो हँसीकेँ हिलोरि-हिलोरि रखि बजली।

सुनीता- बजैकाल मन केहेन रहैन?

राजदेव- जहिना सूर्यास्तक समय सुरूजक किरिण बोरिया-बिस्तर समेट-समेट समटाइत तहिना दादीक दुनियाँ पाछू छुटि गेलैन। बजली जे, बुढ़ामे आदत रहैन जे साँझु पहरकेँ जे लोटा लऽ कऽ विदा होथि तँ करवन धुरि कऽ अबितैथ तेकर ठीक नहि।

सुनीता- केतए चलि जाइ छेलखिन?

राजदेव- केतए जाइ छेलखिन से दादियोकेँ नै ने कहथिन।

सुनीता- तँए ने झगड़ा होइन?

कृष्णानन्द- नै, दुनू कारण भऽ सकैए।

सुनीता-	की?

कृष्णानन्द-	जँ चारि घन्टा वोनाएल रहलापर जेते काज भेल ओते जँ परिवारोमे दोहरौल जाए तँ ओतेक समय आरो चाही। जँ ओते आरो समय लगौल जाए तँ परिवारक काज आ बेकतीगत जीवन (खेनाइ-सुनताइ) प्रभावित हएत।

सुनीता-	तखन तँ समाजोक (काज) बातसँ परिवारक सदस्य हटल रहत?

कृष्णानन्द-	एक अर्थमे हटल रहबो नीक, आ दोसरमे नहियोँ। बेकती आ समाजक बीच परिवारक सीमा अछि। जहिना लोकक समूह परिवार होइत तहिना परिवारक समूह समाज होइत।

सुनीता-	हँ, से तँ होइत, मुदा एक दोसरमे सटल केना रहत। आकि नल-नीलक पाथर जकाँ भँसियाइत रहत।

कृष्णानन्द-	जँ भँसियाइत रहत तँ अनेरे हवा-बिहाड़िमे एक-दोसरसँ टकरा-टकरा, फुटि-फुटि पानिमे डुमैत रहत।

सुनीता-	तखन, की उपए छइ?

कृष्णानन्द-	यएह तँ प्रकृतिक अद्भुत खेल अछि। जेतै दुखक जनम होइत अछि ओतइ सुखोक होइत। सुख-दुख जौंआँ

सहोदर छी।

सुनीता- नीक जकाँ नै बुझि पाबि रहल छी।

कृष्णानन्द- जहिना धरती अकासकेँ शीतल-गर्म हवा जोड़ि कऽ रखने अछि तहिना मनुख-परिवार आ समाजक बीच अछि।

समाप्त।

शब्द संख्या : 1266

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक प्रकाशित पोथीक लोकार्पण विवरण

1. गामक जिनगी: (कथा संग्रह- 2009), लोकार्पण- डॉ. कमला चौधरी
2. मौलाइल गाछक फूल: (उपन्यास- 2009), लोकार्पण- डॉ. रामवतार यादव
3. उत्थान-पतन: (उपन्यास- 2009), लोकार्पण- डॉ. वीणा ठाकुर
4. जिनगीक जीत: (उपन्यास- 2009), लोकार्पण- डॉ. मोहन मिश्र
5. मिथिलाक बेटी: (नाटक- 2009), लोकार्पण- डॉ. राजेन्द्र विमल
6. तरेगन: (प्रेरक कथा संकलन- 2010), लोकार्पण- डॉ. रमानन्द झा 'रमण'
7. जीवन-मरण: (उपन्यास- 2010), लोकार्पण- कुमार रामेश्वर लाल दास
8. जीवन संघर्ष: (उपन्यास- 2010), लोकार्पण- कथाकार अशोक (श्री अशोक कुमार झा)
9. बजन्ता-बुझन्ता: (बीहैन कथा संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री अरूण कु. सिंह SDO
10. शंभुदास: (दीर्घ कथा संग्रह- 2013), लोकार्पण- सदरे आलम 'गोहर'
11. उलबा चाउर: (कथा संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री विनोद कुमार साह
12. अर्द्धांगिनी: (कथा संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री दुर्गानन्द मण्डल
13. सतभैंया पोखैर: (कथा संग्रह- 2013), लोकार्पण- प्रो. जय प्रकाश साह
14. भकमोड़: (कथा संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री नन्द विलास राय
15. नै धाड़ैए: (उपन्यास- 2013), लोकार्पण- श्री गुरुदयाल भ्रमर
16. बड़की बहिन: (उपन्यास- 2013), लोकार्पण- श्री शारदानन्द सिंह
17. इन्द्रधनुषी अकास: (काव्य संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री रामलखन यादव
18. तीन जेठ एगारहम माघ: (गीत संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री चन्दन कुमार झा
19. राति-दिन: (काव्य संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री रामजी प्रसाद मण्डल
20. सरिता: (काव्य संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री बालमुकुन्द पाठक

21. गीतांजलि: (पद्य संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री अमित मिश्र

22. सुखाएल पोखरिक जाइठ: (काव्य संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री बिपीन कुमार कर्ण

23. कम्प्रोमाइज: (नाटक- 2013), लोकार्पण- श्री रामप्रवेश मण्डल

24. झमेलिया बिआह: (नाटक- 2013), लोकार्पण- श्री वीरेन्द कुमार यादव

25. रत्नाकर डकैत: (नाटक- 2013), लोकार्पण- श्री कीशलय कृष्ण

26. स्वयंवर: (नाटक- 2013), लोकार्पण- श्री शम्भु सौरभ

27. पंचवटी: (एकांकी संचयन- 2013), लोकार्पण- श्री राजदेव मण्डल

28. गामक शकल-सूरत: (कथा संग्रह- 2014), लोकार्पण- श्री ओम प्रकाश झा

29. लजबिजी: (कथा संग्रह- 2014), लोकार्पण- श्री श्यामानन्द चौधरी

30. समरथाइक भूत: (कथा संग्रह- 2014), लोकार्पण- श्री राम विलास साहु

31. अप्पन-बीरान: (कथा संग्रह- 2014), लोकार्पण- श्री सच्चिदानन्द 'सचिद'

32. बाल गोपाल: (कथा संग्रह- 2014), लोकार्पण- श्री राम कुमार मण्डल

33. रटनी खढ़: (दीर्घ कथा संग्रह) 2014), लोकार्पण- श्री फागुलाल साहु

34. पतझाड़: (कथा संग्रह- 2014), लोकार्पण- उमेश नारायण कर्ण 'कल्पकवि'

35. गढ़ैनगर हाथ: (कथा संग्रह- 2014), लोकार्पण- श्री कपिलेश्वर राउत

36. अपन मन अपन धन: (कथा संग्रह- 2015), लोकार्पण- डॉ. केष्कर ठाकुर

37. उकड़ू समय: (कथा संग्रह- 2015), लोकार्पण- डॉ. प्रेम शंकर सिंह

38. मधुमाछी: (कथा संग्रह- 2015), लोकार्पण- डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

39. पसेनाक धरम: (कथा संग्रह- 2015), लोकार्पण- डॉ. खुशीलाल मण्डल

40. गुड़ा-खुद्दीक रोटी: (कथा संग्रह- 2015), लोकार्पण- डॉ. दुर्गा प्रसाद साह

41. फलहार: (कथा संग्रह- 2015), लोकार्पण- डॉ. राम अशीष सिंह

42. खसैत गाछ: (कथा संग्रह- 2015), लोकार्पण- डॉ. भीम नाथ झा

43. ठूठ गाछ: (उपन्यास- 2015), लोकार्पण- श्री कमलेश झा

44. कल्याणी: (एकांकी- 2015), लोकार्पण- श्रीमती आशा देवी

45. सतमाए: (एकांकी- 2015), लोकार्पण- श्री मदन प्रसाद साहु

46. समझौता: (एकांकी- 2015), लोकार्पण- श्री मनोज कुमार साहु

47. तामक तमघैल: (एकांकी- 2015), लोकार्पण- श्री हेम नारायण साहु

48. बीरांगना: (एकांकी- 2015), लोकार्पण- श्री राजा राम यादव

49. एगच्छा आमक गाछ: (कथा संग्रह- 2016), लोकार्पण- श्री अमर नाथ झा

50. शुभचिन्तक: (कथा संग्रह- 2016), लोकार्पण- श्री लक्ष्मी नारायण सिंह

51. गाछपर सँ खसला: (कथा संग्रह- 2016), लोकार्पण- डॉ. शिव कुमार प्रसाद

52. डभियाएल गाम: (कथा संग्रह- 2016), लोकार्पण- श्री राजदेव मण्डल

53. गुलेती दास: (कथा संग्रह- 2016), लोकार्पण- डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

54. मुड़ियाएल घर: (कथा संग्रह- 2016), लोकार्पण- श्री रघुवीर मोची

55. बीरांगना: (कथा संग्रह- 2017), लोकार्पण- श्री नारायण यादव

56. स्मृति शेष: (कथा संग्रह- 2017), लोकार्पण- श्री राम विलास साहु

57. बेटीक पैरुख: (कथा संग्रह- 2017), लोकार्पण- श्रीमती मुन्नी कामत

58. क्रान्तियोग: (कथा संग्रह- 2017), लोकार्पण- श्री दुर्गानन्द मण्डल

59. त्रिकालदर्शी: (कथा संग्रह- 2017), लोकार्पण- श्री राम लषण राम 'रमण'

60. पैंतीस साल पछुआ गेलौं: (कथा संग्रह- 2017), लोकार्पण- श्री तुरन्त लाल मण्डल

61. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं: (उपन्यास- 2017), लोकार्पण- ई. कमलाकान्त भारती

62. दोहरी हाक: (कथा संग्रह- 2018), लोकार्पण- श्री राम विलास साहु

63. सुभिमानी जिनगी: (कथा संग्रह- 2018), लोकार्पण- डॉ. शिव कुमार प्रसाद

64. देखल दिन: (कथा संग्रह- 2018), लोकार्पण- श्री महावीर प्रसाद

65. गपक पियाहुल लोक: (कथा संग्रह- 2018), लोकार्पण- श्री चण्डेश्वर खाँ

66. दिवालीक दीप: (कथा संग्रह- 2018), लोकार्पण- श्री नीरज नारयण पाण्डेय SDO

67. अप्पन गाम: (कथा संग्रह- 2018), लोकार्पण- डॉ. शिव शंकर श्रीनिवास

68. लहसन: (उपन्यास- 2018), लोकार्पण- डॉ. कमलकान्त झा

69. पंगु: (उपन्यास- 2018), लोकार्पण- श्री अरविन्द ठाकुर

70. आमक गाछी: (उपन्यास- 2018), लोकार्पण- डॉ सुरेन्द्र कुमार सिंह

71. सतबेध: (गीत संग्रह- 2018), लोकार्पण- श्री प्रीतम कुमार 'निषाद'

72. खिलतोड़ भूमि: (कथा संग्रह- 2019), लोकार्पण- श्री कृष्ण कान्त झा

73. चितवनक शिकार: (कथा संग्रह- 2019), लोकार्पण- श्री जय प्रकाश मण्डल

74. चौरस खेतक चौरस उपज: (कथा संग्रह- 2019), लोकार्पण- श्री जय प्रकाश मण्डल

75. समयसँ पहिने चेत किसान: (कथा संग्रह- 2019), लो.- डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

76. भौक: (कथा संग्रह- 2019), लोकार्पण- श्री राम विलास साहु

77. गामक आशा टुटि गेल: (कथा संग्रह- 19), लो.- श्री उमेश नारायण कर्ण 'कल्पकवि'

78. पसेनाक मोल: (कथा संग्रह- 2019), लोकार्पण- श्री लक्ष्मेश्वर राय (विधायक)

79. चुनौती: (कथा संग्रह- 2019), लोकार्पण- श्री नारायण यादव

80. रहसा चौरी: (गीत संग्रह- 2019), लोकार्पण- श्री शारदानन्द सिंह

81. कृषियोग: (कथा संग्रह- 2020), लोकार्पण- श्री शैलेन्द्र आनन्द

82. हारल चेहरा जीतल रूप: (कथा संग्रह- 2020), लोकार्पण- प्रो. उषा चौधरी

83. रहै जोकर परिवार: (कथा संग्रह- 2020), लोकार्पण- पं. शशिनाथ झा (कुलपति)

84. कामधेनु: (गीत संग्रह- 2020), लोकार्पण- प्रो. धीरेन्द्र कुमार

85. मन मथन: (गीत संग्रह- 2020), लोकार्पण- श्री रामजी प्रसाद मण्डल

86. अकास गंगा: (गीत संग्रह- 2020), लोकार्पण- श्री राम विलास साहु

87. सुचिता: (उपन्यास) 2020), लोकार्पण- डॉ. अशोक अविचल

88. कर्ताक रंग कर्मक संग: (कथा संग्रह- 2020), लोकार्पण- डॉ. योगानन्द झा

89. गामक सूरत बदैल गेल: (कथा संग्रह- 2020), लोकार्पण- श्री अरविन्द प्रसाद

90. अन्तिम परीक्षा: (कथा संग्रह- 2020), लोकार्पण- डॉ. शिव कुमार प्रसाद

91. घरक खर्च: (कथा संग्रह- 2020), लोकार्पण- प्रो. विद्यानाथ झा

92. मोड़पर: (उपन्यास- 2021), लोकार्पण- प्रो. शंकर झा

93. संकल्प: (उपन्यास- 2021), लोकार्पण- श्री राम कृष्ण परार्थी

94. अन्तिम क्षण: (उपन्यास- 2021), लोकार्पण- श्री अरविन्द प्रसाद

95. नीक ठकान ठकेलौं: (कथा संग्रह- 2021), लोकार्पण- डॉ. ज्वालानाथ तेज

96. कुण्ठा: (उपन्यास- 2021), लोकार्पण- श्री अशोक

97. पयस्विनी: (निबन्ध-प्रबन्ध- 2021), लोकार्पण- श्री अरविन्द ठाकुर

98. जीवनक कर्म जीवनक मर्म (कथा संग्रह- 2021), लोकार्पण- डॉ. शिवशंकर श्रीनिवास

99. संचरण: (कथा संग्रह- 2022), लोकार्पण- डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

100. भरि मन काज: (कथा संग्रह- 2022), लोकार्पण- ई. शैलैन्द्र मण्डल

101. आएल आशा चलि गेल: (कथा संग्रह- 2022), लोकार्पण- श्रीमती शीला मण्डल

102. जीवन दान: (कथा संग्रह- 2022), लोकार्पण- श्री विनोद कुमार साह

103. अप्पन साती: (कथा संग्रह- 2022), लोकार्पण- श्री शारदा नन्द सिंह

104. साहित्यकारक विवेक: (कथा संग्रह- 2022), लोकार्पण- डॉ. विभूती आनन्द

105. नब बनक नब फल: (कथा संग्रह- 2022), लोकार्पण- श्री हीरेन्द्र कुमार झा

106. सुनयना बेटी: (उपन्यास- 2023), लोकार्पण- डॉ. कमल कान्त झा

107. सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल: (कथा संग्रह- 2023), लोकार्पण- डॉ. धनाकर ठाकुर

108. बासभूमि: (कथा संग्रह- 2023), लोकार्पण- डॉ. महेन्द्र नारायण राम

109. टकुआटान: (कथा संग्रह- 2023), लोकार्पण- श्री राम नरेश यादव

110. एकलव्यपन: (कथा संग्रह- 2023), लोकार्पण- श्री चन्द्रेश

111. एक चुटकी खुशी: (कथा संग्रह- 2023), लोकार्पण- श्री झौली पासवान

112. नियति आ पुरुषार्थ: (बाल कथा संग्रह- 2023), लोकार्पण- शीघ्र..

113. श्रद्धा: (बाल कथा संग्रह- 2023), लोकार्पण- शीघ्र..

❑❑❑

❑❑

❑

Notes

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....